नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 098
दि. 09.01.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 11 जनवरी को 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' में होंगे शामिल, उनके नेतृत्व में आदि ज्योतिर्लिंग सोमनाथ का 'स्वर्णिम युग' आया

- हर वर्ष लगभग 97 लाख श्रद्धालु सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन करते हैं, महाशिवरात्रि-2025 में ही 3.56 लाख भक्त पहुँचे
- फोर लेन हाईवे, साबरमती-वेरावळ वंदे भारत, केशोद तथा राजकोट एयरपोर्ट से सोमनाथ बना वैश्विक प्रवेश द्वार
- सोमनाथ की गाथा का वर्णन करने वाले लाइट एंड साउंड शो ने पिछले तीन वर्ष में 10 लाख से अधिक आगंतुकों को आकर्षित किया
- नेट-जीरो मंदिर बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है 'स्वच्छ आइकॉनिक प्लेस' सोमनाथ
- गूगल पर भारतीयों द्वारा सर्वाधिक सर्च किए गए शीर्षस्थ 10 स्थानों में सोमनाथ शामिल

(जीएनएस)। गांधीनगर : 'सौराष्ट्रे सोमनाथं च, श्री शैले मल्लिकार्जुनम्, उज्जयिन्यां महाकालम् ॐ कारम अमलेश्वरम्।' द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम की यह पंक्ति दर्शाती है कि जब भारत के 12 पवित्र ज्योतिर्लिंगों का वर्णन होता है, तब सबसे पहले सोमनाथ का उल्लेख आता है। यह भारत की संस्कृति में सोमनाथ का अग्रिम स्थान तथा उसके अविनाशी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्व को दर्शाता है। पिछले दो दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सोमनाथ मंदिर 'स्वर्णिम युग' में प्रविष्ट हुआ है। उनके श्री सोमनाथ ट्रस्ट का अध्यक्ष बनने के बाद से सोमनाथ के विकास में एक नया अध्याय शुरू हुआ है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2026 में महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ पर 1026 में किए गए प्रथम आक्रमण के हजार वर्ष पूर्ण होंगे। आज एक हजार वर्षों के बाद भी सोमनाथ मंदिर पूर्ण गौरव के साथ अडिग खड़ा है। संयोग से 2026 में ही सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के 75 वर्ष पूर्ण होने वाले हैं। 11 मई, 1951 को इस भव्य मंदिर का पुनर्निर्माण संपन्न हुआ था और फिर यह भक्तों के लिए खुला था। इस सीमाचिह्न समान घटना को और विशेष बनाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आगामी 11 जनवरी को सोमनाथ की यात्रा पर आएंगे और 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' में उपस्थिति देंगे।

सोमनाथ : भक्ति एवं भव्यता का संगम

शिखर पर 1,666 स्वर्ण कलशों तथा 14,200 ध्वजाओं के साथ सोमनाथ मंदिर तीन पीढ़ियों की अडिग श्रद्धा, दृढ़ता तथा कलात्मकता के प्रतिबिंब के रूप में खड़ा है। हर वर्ष लाखों लोग इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए आते हैं। वर्ष 2020 से 2024 तक वार्षिक अनुमानित 97 लाख श्रद्धालु सोमनाथ के दर्शन के लिए आए हैं। बिल्व पूजा के लिए पिछले 2 वर्ष में श्रद्धालुओं की संख्या 13.77 लाख दर्ज हुई थी, पिछले 2 वर्ष में श्रद्धालुओं की संख्या 13.77 लाख दर्ज हुई थी, जिसमें महाशिवरात्रि-2025 के दौरान 3.56 लाख श्रद्धालु आए थे। आज ऑनलाइन बुकिंग तथा पोस्टल प्रसादी की सुविधा यह सुनिश्चित करती है कि सोमनाथ की पवित्रता मंदिर की सीमाओं को पारकर सभी भक्तों तक पहुँचे।

आस्था के साथ उत्सव का केन्द्र है सोमनाथ यात्राधाम

सोमनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं के लिए लाइट एंड साउंड शो तथा उत्सवों का आकर्षण भी रहा है। पिछले 3 वर्ष में 10 लाख से अधिक लोगों ने सोमनाथ की गाथा का वर्णन करने वाला लाइट एंड साउंड शो को देखा है। सोमनाथ प्रांगण में मनाए जा रहे उत्सव की बात करें, तो गत वर्ष वंदे सोमनाथ कला महोत्सव में 1,500 वर्ष पुरानी नृत्य परंपराएँ पुनर्जीवित हुई थीं, जो दर्शाता है कि सोमनाथ केवल आस्था का केन्द्र नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत को भी उजागर करता है।

भारतीयों द्वारा सर्वाधिक सर्च किए गए शीर्षस्थ 10 स्थानों में सोमनाथ शामिल

गूगल पर भारतीयों द्वारा सर्वाधिक सर्च किए गए शीर्षस्थ 10 स्थानों में सोमनाथ शामिल है। इसके अलावा, 2025 में सोमनाथ की सोशल मीडिया इम्प्रेशन 1.37 अरब को पार कर गई है, जो विश्वभर के भक्तों में सोमनाथ के प्रति श्रद्धा एवं आध्यात्मिक महत्व को दर्शाती है। भारत की आस्था तथा स्वाभिमान का प्रतीक सोमनाथ मंदिर विकसित भारत के निर्माण के लिए भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल देते हुए लिखा था, "यदि हजार वर्ष पहले खंडित हुआ सोमनाथ मंदिर संपूर्ण वैभव के साथ पुनः खड़ा हो सकता है, तो हम हजार वर्ष पहले वाला समृद्ध भारत भी पुनः बना सकते हैं।"

नेट-जीरो मंदिर बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है सोमनाथ

वर्ष 2018 में 'स्वच्छ आइकॉनिक प्लेस' के रूप में मान्यता प्राप्त करने वाला सोमनाथ आज टिकाऊ विकास तथा नवाचार का उत्तम उदाहरण बना है। वेस्ट सेग्रिगेशन केन्द्रों में अब मंदिर के फूलों को वर्मीकम्पोस्ट में रूपांतरित कर उसका उपयोग 1,700 बिल्व वृक्षों के संवर्धन में होता है। मिशन लाइफ पहल अंतर्गत प्लास्टिक कूड़े से प्रतिमाह पेवर ब्लॉक्स तैयार किए जाते हैं। यहाँ हर महीने लगभग 4,700 प्लास्टिक-फ्लाई एश ब्लॉक्स का उत्पादन किया जाएगा, जो स्थानीय महिला स्वयं-सहायता समूहों के लिए आय सृजित करेगा तथा वार्षिक 125 टन प्लास्टिक रिसाइकिल करेगा। 62 लाख रुपए की लागत से पुनर्स्थापित किए गए छह वर्षा जल संग्रह कुएँ तथा एक जलाशय हर महीने लगभग 30 लाख लीटर सीवेज जल को शुद्ध करते हैं, जिसका उपयोग वनीकरण के लिए किया जाता है, जबकि 2019-20 में 160 लाख रुपए के निवेश से स्थापित आठ सीवेज शुद्धिकरण प्लांट्स ने कृषि एवं लैंडस्केप सिंचाई के लिए 20.53 करोड़ लीटर पानी फिल्टर किया है। 72,000 वर्ग फीट क्षेत्र में विकसित तथा 7,200 पेड़ों से समृद्ध मियावाकी वन समुद्री तथा क्षारीय हवाओं से रक्षा देता है। आईआईटी-कानपुर के अध्ययन के अनुसार यह वन दो वर्ष बाद वार्षिक 93,000 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड शोषित करेगा। इतना ही नहीं; ट्रस्ट द्वारा सेवा भाव से अभिषेक का पवित्र जल नौ स्तरीय शुद्धिकरण प्लांट द्वारा शुद्ध करके 'सोम गंगाजल' के रूप में 15 रुपए में वितरित किया जाता है। दिसंबर-2024 तक 1.13 लाख से अधिक परिवारों को इसका लाभ मिला है। इन सभी प्रयासों द्वारा सोमनाथ नेट-जीरो मंदिर बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

आधुनिक परिवहन सेवाएँ तथा वैश्विक कनेक्टिविटी

सोमनाथ की यात्रा भक्तों के लिए अधिक सरल तथा आरामदायक बने; इस उद्देश्य से कनेक्टिविटी में महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं। 828 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट 'जेतपुर-सोमनाथ फोर लेन हाईवे' के कारण यात्रियों-श्रद्धालुओं को एक्सप्रेस वे की सुविधा मिली है। साबरमती-वेरावळ वंदे भारत एक्सप्रेस के कारण अहमदाबाद से सोमनाथ की यात्रा अब अधिक तेज एवं सुलभ बनी है। इसके अलावा, वर्ष 2022 में पुनः शुरू किए गए केशोद एयरपोर्ट तथा 2023 में राजकोट अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के उद्घाटन के बाद अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए सोमनाथ पहुँचना सुलभ बना है।

स्वाभिमान पर्व में शिव भक्तों के स्वागत के लिए सोमनाथ सज्ज : 'जय सोमनाथ' के नाद के साथ तैयारियां पूर्ण

सोमनाथ मंदिर तथा आसपास के क्षेत्रों में रोशनी और साज-सज्जा के साथ शिव आराधना

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व, अटूट आस्था के 1000 वर्ष के उपलक्ष्य में 8 से 10 जनवरी स्वाभिमान पर्व को श्रद्धापूर्वक उत्सव का प्रारंभ हुआ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 10–11 जनवरी को सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अवसर पर सोमनाथ में उपस्थित रहेंगे। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व की पूर्व संध्या पर राज्य सरकार के मार्गदर्शन में पूरे सोमनाथ क्षेत्र में सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के लिए विभिन्न व्यवस्थाएं और जनता के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। विभिन्न विभागों के

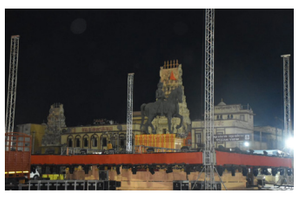

सचिव एवं प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा स्वाभिमान पर्व अंतर्गत होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में व्यवस्थाएं सुचारु रूप से बनी रहें, इसके लिए अलग-अलग टीमें गठित कर कार्य पूर्ण किया गया है। 7 जनवरी की रात को सोमनाथ के विभिन्न मार्गों को अत्यंत सुंदर ढंग से रोशनी और आध्यात्मिक चेतना के प्रतीकों से सजाया गया। त्रिवेणी रोड, हमीरसिंह सर्कल, शंख सर्कल, भीडिया-पाटण रोड, सर्किट हाउस रोड तथा सोमनाथ मंदिर क्षेत्र के मार्गों को साज-सज्जा, रोशनी, शिव आराधना के चित्रों, ध्वजों, सड़कों पर भगवान शिव की मूर्तियों सहित विभिन्न तैयारियों से सजाया गया है, जिससे संपूर्ण सोमनाथ सज्ज हो उठा है। समग्र गुजरात से शिव भक्त ट्रेन और बसों के माध्यम से सोमनाथ पहुंच रहे हैं। तीन दिनों तक होने वाले अखंड 'ओमकार' मंत्रोच्चार से सोमनाथ का वातावरण अलौकिक अनुभूति के साथ दिव्य बन गया है। वर्ष 1026 से 2026 तक के संघर्ष, शौर्य, वीरता, स्वाभिमान और अटूट श्रद्धा के 1000 वर्षों के साथ स्वाभिमान पर्व का यह संदेश नई पीढ़ी को भारत की शाश्वत सनातन संस्कृति की गाथा को आत्मसात करने की प्रेरणा देता है।

सोमनाथ के आंगन में 'स्वाभिमान पर्व' का मंगल आरंभ

राजकोट से विशेष ट्रेन द्वारा सोमनाथ पहुंचे हजारों शिवभक्त; 'जय सोमनाथ', 'हर हर भोले' के जयघोष से गूंज उठा पूरा स्टेशन परिसर

एक हजार वर्षों के संघर्ष और आस्था की विजय गाथा को स्मरण कर भावविभोर हुए श्रद्धालु

(जीएनएस)। गांधीनगर, 08 दिसंबर : भारतीय संस्कृति के राष्ट्रीय स्वाभिमान व अजेय आस्था के प्रतीक प्रथम ज्योतिर्लिंग श्री सोमनाथ महादेव के सान्निध्य में 08 से 11 जनवरी तक 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' का भव्य शुभारंभ हुआ है। यह महोत्सव केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि सोमनाथ के एक हजार वर्षों के संघर्ष, बलिदान और पुनर्निर्माण की अप्रतिम गाथा को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का एक माध्यम है। इस पर्व में सहभागी होने के लिए राज्य सरकार द्वारा चार महानगरों से विशेष ट्रेनें चलाई गई हैं। इसी क्रम में आज राजकोट से विशेष ट्रेन सोमनाथ रेलवे स्टेशन पर पहुंची। 'हर हर भोले' और 'जय सोमनाथ' के गगनभेदी जयघोष से पूरा स्टेशन परिसर गूंज उठा। सोमनाथ का इतिहास विनाश के सामने सृजन की विजय की कथा है। वर्ष 1026 में महमूद गजनवी के आक्रमण से लेकर सदियों तक विदेशी आक्रमणकारियों ने इस आस्था के केंद्र को खंडित करने का प्रयास किया, लेकिन हर बार भारतवर्ष के वीरों ने अपने रक्त से इस धरती की रक्षा की। इस पर्व के माध्यम से हमीरजी गोहिल तथा वेगडाजी भील जैसे अनगिनत शहीदों के बलिदान को श्रद्धांजलि दी जा रही है। श्रद्धालुओं के लिए यह केवल दर्शन नहीं, बल्कि पूर्वजों के संघर्ष की स्मृति भी है।

-:यात्रियों की हृदयस्पर्शी प्रतिक्रियाएं:-

दीपकभाई दवे (राजकोट)

"हम केवल ट्रेन में बैठकर दर्शन करने नहीं आए हैं, हम अपने गौरवशाली इतिहास को नमन करने आए हैं। सोमनाथ पर हुए अनेक आक्रमणों के बावजूद आज यह भव्य शिखर खड़ा है, जो हमारी संस्कृति की जीवंतता को दर्शाता है। सरकार के इस 'स्वाभिमान पर्व' के आयोजन से हमें सोमनाथ के 1000 वर्षों के संघर्ष की गाथा में सहभागी बनने का जो अवसर मिला है, वह अलौकिक है।"

देवांग जानी (युवा श्रद्धालु – सुरेन्द्रनगर)

"राजकोट से सीधी ट्रेन मिलने से हमारी यात्रा सरल हो गई। सरदार पटेल ने जिस प्रकार इस मंदिर का पुनर्निर्माण कराया और आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जिस तरह इसे विश्वस्तरीय बना रहे हैं, उसे देखकर लगता है कि हमारा स्वाभिमान आज सही अर्थों में सम्मानित हो रहा है।"

जगदीशभाई परमार (राजकोट)

"यहाँ स्वाभिमान पर्व में जुड़कर अनुभव हुआ कि सोमनाथ के लिए कितने लोगों ने बलिदान दिया है। ट्रेन की सुविधा देकर सरकार ने हमें इस महान विरासत से जुड़ने का जो अवसर दिया है, उसके लिए हम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी तथा सरकार के आभारी हैं।"

उल्लेखनीय है कि आगामी तीन दिनों तक सोमनाथ में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से सोमनाथ की पौराणिक गाथा प्रस्तुत की जाएगी। 11 जनवरी तक चलने वाले इस महोत्सव में अहमदाबाद, सूरत और वडोदरा से भी श्रद्धालु विशेष ट्रेनों के माध्यम से सोमनाथ के सान्निध्य में पहुंचेंगे।

अहमदाबाद मंडल में आरपीएफ की सतर्कता एवं त्वरित कार्रवाई से यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे, अहमदाबाद मंडल के रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के अधिकारी एवं जवान यात्रियों के जीवन, सम्मान एवं संपत्ति की सुरक्षा के लिए निरंतर सतर्क एवं प्रतिबद्ध रहते हैं। पिछले तीन दिनों के दौरान आरपीएफ द्वारा सतर्कता, त्वरित निर्णय एवं समन्वित कार्रवाई के माध्यम से कई सराहनीय कार्य किए गए हैं, जिनमें यात्रियों के कीमती सामान की सुरक्षित वापसी, चलती ट्रेन में गिरने से महिला यात्री की जान बचाना, भटकी हुई युवती को उसके परिजनों तक सुरक्षित पहुँचाना तथा नाबालिग लड़की को बहला-फुसलाकर ले जाने के मामले में त्वरित रेस्क्यू शामिल हैं।

1. चलती ट्रेन से गिरने से महिला यात्री की जान बचाई

दिनांक 06.01.2026 को अहमदाबाद रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या 01, गेट नंबर 04 पर ड्यूटी पर तैनात महिला हेड कॉन्स्टेबल जागृति चौधरी द्वारा समय लगभग 09:40 बजे प्लेटफॉर्म के मध्य गश्त के दौरान एक महिला यात्री को चलती गाड़ी में चढ़ने से मना किया गया। इसके बावजूद महिला द्वारा लापरवाहीपूर्वक चलती ट्रेन में चढ़ने का प्रयास किया गया, जिससे उसका संतुलन बिगड़ गया और वह ट्रेन एवं प्लेटफॉर्म के गैप में गिरने लगी। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए कॉन्स्टेबल जागृति चौधरी ने तत्परता दिखाते हुए महिला यात्री को पकड़कर तुरंत ट्रेन से दूर खींच लिया, जिससे एक बड़ी दुर्घटना टल गई और महिला की जान बच सकी। उक्त महिला यात्री का नाम पारवाता बाई (उम्र 65 वर्ष), निवासी येवतमाल, अमरावती (महाराष्ट्र) बताया गया, जो सवारी गाड़ी संख्या 22940 के S/4 कोच, सीट नंबर 64 पर ठाट बदनेरा से जामनगर तक यात्रा कर रही थीं।

2. चोरी हुआ कीमती मोबाइल एवं पर्स सफलतापूर्वक बरामद

दिनांक 05.01.2026 को समय 09:07 बजे, कंट्रोल रूम के माध्यम से गाड़ी संख्या 22738 सिकंदराबाद एक्सप्रेस, कोच S-3, सीट नंबर 47 में यात्रा कर रही महिला यात्री श्रीमती रिती कुमारी द्वारा रेल मदद के माध्यम से सूचना दी गई कि अहमदाबाद स्टेशन आगमन पर नींद से जागने पर उनका पिंक रंग का पर्स, जिसमें एक iPhone मोबाइल (अनुमानित मूल्य 90,000) एवं 500/- नगद थे, चोरी हो गया है। CPDS (क्राइम प्रिवेंशन डिटेक्शन टीम) इंचार्ज सहायक उपनिरीक्षक (ASI) मान सिंह ने तत्परता दिखाते हुए शिकायतकर्ता के पति श्री कन्हैयालाल शर्मा से संपर्क कर मोबाइल का नंबर एवं IMEI ID प्राप्त की। आधुनिक तकनीक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए मोबाइल की लोकेशन ट्रेस की गई, जिससे मोबाइल के पालनपुर स्टेशन के निकट होने की जानकारी मिली। इस सूचना को तत्काल DSCR (डिवीजनल सिक्यूरिटी कंट्रोल रूम) अहमदाबाद एवं संबंधित निरीक्षकों के साथ साझा किया गया। तत्पश्चात निरीक्षक, पालनपुर द्वारा खोजबीन कर मोबाइल फोन रेलवे ट्रैक के पास एक गैंगमैन से बरामद किया गया, जिसने पर्स एवं मोबाइल को लावारिस हालत में मिलने की जानकारी दी। इस प्रकार आरपीएफ की सतर्कता एवं तकनीकी दक्षता से यात्री के कीमती सामान को सुरक्षित रिकवर किया गया।

3. गलत ट्रेन से पहुँची युवती को सुरक्षित परिजनों तक पहुँचाया

दिनांक 07.01.2026 को समय 12:00 बजे, अहमदाबाद स्टेशन प्लेटफॉर्म संख्या 01, गेट नंबर 04 पर एक युवती महिला हेड कॉन्स्टेबल जागृति चौधरी के पास सहायता हेतु आई। युवती ने हिंदी न आने की बात बताते हुए अपना नाम रोस रविना (उम्र 21 वर्ष), निवासी गाँव मिरल, जिला गुमला, झारखंड बताया तथा गलत ट्रेन में बैठकर अहमदाबाद पहुँचने की जानकारी दी। उप निरीक्षक (SIPF) बीजेन्द्र सिंह एवं स्टाफ द्वारा युवती को 1098 चाइल्ड हेल्पलाइन के प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर के पास ले जाया गया, जहाँ उसके परिजनों से संपर्क किया गया। परिजनों द्वारा बताया गया कि उसका भाई गौतम उसे लेने अहमदाबाद आ रहा है। आवश्यक कागजी कार्रवाई पूर्ण कर युवती को सुरक्षित रूप से चाइल्ड हेल्पलाइन के सुपुर्द किया गया।

4. नाबालिग लड़की का अपहरण मामला सुलझाया

दिनांक 07.01.2026 को समय 00:03 बजे, DSCR (डिवीजनल सिक्यूरिटी कंट्रोल रूम) अहमदाबाद द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि एक 17 वर्षीय नाबालिग लड़की को बहला-फुसलाकर अपहरण कर लिया गया है, जो ट्रेन संख्या 19166 (अहमदाबाद–साबरमती एक्सप्रेस) में यात्रा कर रही है। मामले की गंभीरता को देखते हुए निरीक्षक, अहमदाबाद के निर्देशन में गठित CPDS (क्राइम प्रिवेंशन डिटेक्शन टीम) टीम द्वारा ट्रेन के अहमदाबाद आगमन पर गहन चेकिंग की गई। चेकिंग के दौरान कॉन्स्टेबल रामावतार स्वामी एवं कॉन्स्टेबल नन्नू राम मीणा ने संदिग्ध लड़का-लड़की को रोका, जो प्राप्त फोटो से मेल खाते पाए गए। पूछताछ में संतोषजनक उत्तर न मिलने पर दोनों को डिटेन किया गया। बाद में अहमदाबाद क्राइम पुलिस टीम को सूचित कर अपहरण के मामले में अग्रिम कार्रवाई हेतु लड़की एवं आरोपी को उनके सुपुर्द किया गया तथा संबंधित थाना रायगंज (प. बंगाल) को भी सूचना दी गई। इस प्रकार आरपीएफ की सतर्कता से एक गंभीर अपराध का समय रहते खुलासा किया गया।

संपादकीय

शिक्षकों से कुत्तों की गिनती कराना

हाल के दिनों में देश की शीर्ष अदालत से लेकर आम विमर्श तक में आवारा कुत्तों का मामला सुर्खियों में रहा है। इस संवेदनशील, जटिल व विवादास्पद मुद्दे से जुड़े कई तरह के अंतर्विरोध सामने आ रहे हैं। लेकिन इस कड़ी में बिहार के एक नगर निगम के बेतुके फरमान को लेकर आलोचना की जा रही है। यह निर्णय न केवल बेतुका है बल्कि हास्यास्पद भी है। बिहार के सासाराम के नगर निगम ने शिक्षकों से सड़कों में घूमने वाले आवारा कुत्तों की गिनती करने को कहा है। दरअसल, अदालत के निर्देशों के अनुरूप स्थानीय निकायों की इस बाबत जवाबदेही तय की गई है। सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता पर उठ रहे सवालों व गिरते परीक्षा परिणाम के बावजूद शिक्षकों को गैर-शिक्षण कार्यों में लगाना दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा। वहीं दूसरी ओर हर छोटे-बड़े सरकारी अभियान में शिक्षकों की जिम्मेदारी लगाना प्रशासनिक विफलता को भी उजागर करता है। कभी जनगणना, कभी चुनावी ड्यूटी तो कभी आपदा सर्वेक्षण, और अब कुत्तों की गिनती का बेतुका काम शिक्षकों के जिम्मे लगा दिया गया है। दरअसल, बिहार के शिक्षक विषम परिस्थितियों के चलते पहले ही अत्यधिक दबाव में हैं। जिसके कारण वे शैक्षणिक जिम्मेदारियों व गैर-शिक्षण दायित्वों के लगातार बढ़ते बोझ के बीच संतुलन बनाने के लिये संघर्ष कर रहे हैं। इसमें दो राय नहीं है कि हर इस तरह का व्यवधान कक्षा के समय, पाठ योजना और छात्रों की सहभागिता को गहरे तक प्रभावित करता है। निश्चित रूप से प्राथमिक शिक्षा बच्चे के विकास की नींव रखती है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि बिहार के स्कूलों का परीक्षा परिणाम बेहद निराशाजनक रहता है। वर्षों से पेश की जा रही एएसईआर रिपोर्टों में कई बार उजागर किया गया है कि बिहार के स्कूलों का परीक्षा परिणाम देश में सबसे कमजोर रहा है। जो कि एक चिंता का विषय बना हुआ है।

ऐसे में जब पहले ही बिहार के स्कूलों का परीक्षा परिणाम निराशाजनक रहता है तो शिक्षकों को एक और गैर-शैक्षणिक कार्य के लिये कक्षाओं से बाहर निकालना, निस्संदेह शिक्षा व्यवस्था के लिए आत्मघाती कदम ही कहा जाएगा। इससे भी बुरी बात यह है कि यह आदेश कई वास्तविक खतरों से भरा है। आवारा कुत्तों की गिनती करना शिक्षण के कागजी कार्य के समान सहज नहीं है। निश्चित रूप से अनेक शिक्षक ऐसे होंगे जो कुत्तों से डरते भी होंगे। खासकर शिक्षिकाओं के लिये यह कार्य खासा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। कुछ लोग इस गणना प्रक्रिया में वास्तविक खतरे का सामना भी कर सकते हैं। इस बात का संकेत शीर्ष अदालत की टिप्पणी में भी मिलता है। दरअसल, सर्वोच्च न्यायालय ने इस बात पर जोर दिया था कि किसी कुत्ते के मन को पढ़ना या यह अनुमान लगाना असंभव है कि कोई जानवर कब आक्रामक हो जाएगा। निश्चित रूप से अप्रशिक्षित शिक्षकों को ऐसे कार्य करने के लिए कहना, उनकी सुरक्षा के लिये भी चुनौती होगी। खासकर तब जब आवारा कुत्तों के काटने की घटनाएं और रेबीज से होने वाली जीवन क्षति सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिये चिंता का विषय बनी हुई हैं। ऐसे में नगर निगम के आदेश की तार्किकता पर सवाल उठना स्वाभाविक है। दरअसल, सर्वोच्च न्यायालय ने पशु जन्म नियंत्रण और जन सुरक्षा उपायों को लागू करने में नगरपालिकाओं की विफलता पर सवाल उठाए थे। जिसके बाद एक स्थानीय निकाय ने अपनी मूल जिम्मेदारी शिक्षकों पर थोपकर इसका जवाब दिया है। निश्चित रूप से यह अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ने जैसा है। निर्विवाद रूप से इस बेतुके आदेश को तत्काल प्रभाव से रद्द करने की जरूरत है। सही मायनों में नगरपालिका के अधिकारियों को अपना काम करना चाहिए और शिक्षकों को भी अपना काम करने की आजादी दी जानी चाहिए। यह समस्या केवल शिक्षकों की ही नहीं है बल्कि यह हमारे नौनिहालों के भविष्य से खिलवाड़ करने जैसा है। ऐसे में शिक्षकों को शिक्षण कार्य के अलावा अन्यत्र काम सौंपना, कहीं न कहीं छात्रों और छात्राओं को शिक्षा पाने के अधिकार से वंचित करने जैसा भी है।

समुद्र अब केवल व्यापार का रास्ता नहीं रहा, वह महाशक्तियों की ताकत परखने की प्रयोगशाला बन गया है

> इस पूरे घटनाक्रम को और गंभीर बना दिया रूस के कदम ने। रूस ने इस टैंकर की सुरक्षा के लिए अपनी पनडुब्बी और अन्य नौसैनिक जहाज तैनात कर दिए। यह साफ संदेश था कि मॉस्को इस जहाज को केवल एक व्यापारिक पोत नहीं बल्कि अपनी रणनीतिक प्रतिष्ठा से जुड़ा मामला मान रहा है।

अटलांटिक महासागर के खुले पानी में एक दिन पहले जो घटा, उसने पूरी दुनिया का ध्यान खींच लिया है। अमेरिका ने रूसी झंडे वाले एक तेल टैंकर को जब्त कर लिया, जिसका सीधा संबंध वेनेजुएला के तेल व्यापार से बताया जा रहा है। यह वही टैंकर है, जिसे लेकर बीते कुछ सप्ताह से अमेरिका और रूस के बीच जबरदस्त तनाव चल रहा था। जानकारी के अनुसार, अमेरिका का आरोप था कि यह जहाज प्रतिबंधों को तोड़कर वेनेजुएला का कच्चा तेल अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंचाने में लगा हुआ था। अमेरिका का कहना है कि यह तेल अवैध तरीके से बेचा जा रहा था और इससे वेनेजुएला सरकार को आर्थिक सांस मिल रही थी। इसी आधार पर अमेरिका ने समुद्र में इस टैंकर को रोकने और अपने नियंत्रण में लेने का फैसला किया। इस पूरे घटनाक्रम को और गंभीर बना दिया रूस के कदम ने। रूस ने इस टैंकर की सुरक्षा के लिए अपनी पनडुब्बी और अन्य नौसैनिक जहाज तैनात कर दिए। यह साफ संदेश था कि मॉस्को इस जहाज को केवल एक व्यापारिक पोत नहीं बल्कि अपनी रणनीतिक प्रतिष्ठा से जुड़ा मामला मान रहा है। समुद्र में अमेरिकी और रूसी नौसेनाएं आमने सामने रहीं। आखिरकार अमेरिका ने टैंकर को अपने कब्जे में ले लिया, जिसके बाद रूस ने तीखी प्रतिक्रिया दी।

रूस ने इस कार्रवाई को अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून का उल्लंघन बताया और कहा कि अमेरिका खुले तौर पर समुद्री डकैती पर उतर आया है। वहीं अमेरिका ने इसे प्रतिबंध लागू करने की वैध कार्रवाई बताया। इस

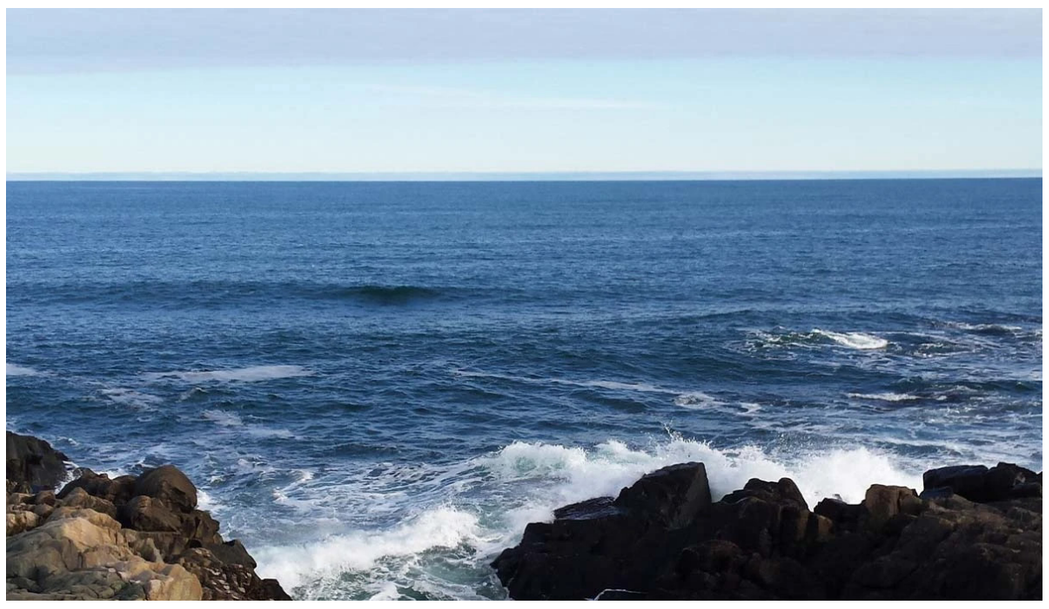

एक टैंकर ने दो महाशक्तियों को ऐसी टकराव की स्थिति में ला दिया, जिसने शीत युद्ध की यादें ताजा कर दीं।

देखा जाये तो यह घटना किसी एक जहाज की कहानी नहीं है। यह उस बदलती हुई दुनिया की तस्वीर है, जहां ताकतवर देश नियम बनाते भी हैं और उन्हें तोड़ते भी हैं। समुद्र के बीच एक तेल टैंकर आज अमेरिका और रूस के बीच शक्ति संघर्ष का प्रतीक बन चुका है। अमेरिका का रवैया साफ है। वह वेनेजुएला को घुटनों पर लाने के लिए हर हद पार करने को तैयार है। तेल वेनेजुएला की जीवन रेखा है और अमेरिका उसी रेखा को काट देना चाहता है। टैंकर की जब्ती यह बताती है कि अब अमेरिका केवल आर्थिक प्रतिबंधों तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि उन्हें बंदूक और युद्धपोत के दम पर लागू करने की नीति अपना चुका है।

वहीं, रूस के लिए यह केवल वेनेजुएला का सवाल नहीं है। यह उसकी वैश्विक साख और प्रभाव का सवाल है। अगर रूस अपने सहयोगी देशों के व्यापार और संसाधनों की रक्षा नहीं कर पाता, तो उसकी ताकत केवल भाषणों तक सिमट कर रह जाएगी। इसी कारण मॉस्को ने पनडुब्बी और युद्धपोत भेजकर यह दिखा दिया कि वह समुद्र में भी अमेरिका को खुली चुनौती देने से नहीं डरेगा। सामरिक दृष्टि से देखा जाये तो यह टकराव बेहद महत्वपूर्ण है। पहली बात, यह संघर्ष समुद्री मार्गों को युद्ध क्षेत्र में बदल रहा है। अब समुद्र केवल व्यापार का रास्ता नहीं रहा, बल्कि वह महाशक्तियों की ताकत परखने की प्रयोगशाला बन गया है। दूसरी बात, पनडुब्बियों और युद्धपोतों की तैनाती बताती है कि किसी भी समय एक छोटी घटना बड़े सैन्य टकराव में बदल सकती है। देखा जाये तो तेल की राजनीति इस पूरे खेल के केंद्र में है। वेनेजुएला के पास विशाल तेल भंडार हैं और उस पर नियंत्रण का मतलब है वैश्विक ऊर्जा बाजार पर प्रभाव। अगर अमेरिका इसमें सफल होता है, तो वह तेल की कीमतों और आपूर्ति को अपने हितों के अनुसार मोड़ सकेगा। वहीं रूस और उसके साथी देश चाहते हैं कि पश्चिमी दबदबा टूटे और वैकल्पिक व्यवस्था खड़ी हो।

साथ ही दो महाशक्तियों की इस भिडंत का असर पूरी दुनिया पर पड़ेगा। सबसे पहला असर ऊर्जा कीमतों पर होगा। अनिश्चितता बढ़ते ही तेल और गैस की कीमतें उछलेंगी, जिसका बोझ सीधे आम जनता पर पड़ेगा। दूसरा असर वैश्विक राजनीति पर होगा। छोटे और मध्यम देश दबाव में आ जाएंगे कि वे किस खेमे में खड़े हों।

साथ ही यह टकराव दुनिया को नए गुटों में बांट सकता है। एक तरफ अमेरिका के नेतृत्व वाला पश्चिमी समूह होगा, तो दूसरी तरफ रूस के साथ खड़े वे देश होंगे जो अमेरिकी वर्चस्व से असहज हैं। यह विभाजन व्यापार, तकनीक और सुरक्षा सभी क्षेत्रों में दिखाई देगा। सबसे खतरनाक पहलू यह है कि अंतरराष्ट्रीय कानून अब ताकतवर देशों के लिए केवल एक हथियार बनता जा रहा है। जब जरूरत हो तो कानून की दुहाई दी जाती है और जब जरूरत न हो तो उसे ताक पर रख दिया जाता है। इससे वैश्विक व्यवस्था की नींव कमजोर होती है।

बहरहाल, यह कहना गलत नहीं होगा कि यह टैंकर भविष्य की झलक है। आने वाले समय में ऐसे टकराव और तेज होंगे। समुद्र, आकाश और ऊर्जा संसाधन नई जंग के मैदान बनेंगे। अमेरिका और रूस की यह रस्साकशी केवल दो देशों की नहीं, बल्कि पूरी मानवता के भविष्य से जुड़ी हुई है।

प्रेरणा

समर्पण की कीमत पर रची गई महानता

कला का मार्ग सदैव सहज नहीं होता। यह रास्ता धैर्य, अनुशासन, साधना और कई बार व्यक्तिगत त्याग की मांग करता है। इतिहास में जब-जब किसी कलाकार ने अपने क्षेत्र में अमरता प्राप्त की है, उसके पीछे केवल प्रतिभा नहीं बल्कि अटूट समर्पण और कठोर परिश्रम की कहानी छिपी होती है। अठारहवीं सदी के महान चित्रकार सर जोशुआ रेनॉल्ड्स का जीवन इसी सत्य का जीवंत उदाहरण है। उन्होंने कला को केवल जीविका का साधन नहीं माना, बल्कि उसे अपने अस्तित्व का आधार बनाया। उनकी पूरी जीवन-यात्रा इस बात की गवाही देती है कि सच्चा कलाकार सुविधाओं का नहीं, सिद्धांतों का चयन करता है।

जोशुआ रेनॉल्ड्स उस दौर में पैदा हुए, जब यूरोप में कला तेजी से विकसित हो रही थी। चित्रकला में नए प्रयोग हो रहे थे और पुराने उस्तादों की कृतियां कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत थीं। रेनॉल्ड्स ने आरंभ से ही यह समझ लिया था कि केवल अभ्यास से नहीं, बल्कि महान कलाकारों के कार्यों के गहन अध्ययन से ही कला को ऊंचाइयों तक ले जाया जा सकता है। इसी सोच के साथ उन्होंने इटली जाने का निर्णय लिया। उस समय इटली को कला की आत्मा कहा जाता था, जहां राफेल, माइकल एंजेलो और लियोनार्डो दा विंची जैसे महान कलाकारों की कृतियां मौजूद थीं। रेनॉल्ड्स के लिए यह यात्रा केवल स्थान परिवर्तन नहीं, बल्कि आत्मिक यात्रा थी।

इटली पहुंचकर उन्होंने स्वयं को पूरी तरह अध्ययन में झोंक दिया। वेटिकन में स्थित राफेल और माइकल एंजेलो की अमर कृतियों ने उन्हें भीतर तक प्रभावित किया। वे घंटों उन चित्रों को देखते रहते, उनकी रेखाओं, रंगों और भावों को समझने का प्रयास करते। कई बार वे इतने तल्लीन हो जाते कि समय का भान ही नहीं रहता। वेटिकन की ऊंची दीवारों के भीतर ठंड अत्यधिक थी, लेकिन रेनॉल्ड्स को न मौसम की परवाह थी और न अपने शरीर की। उनके लिए उस समय केवल कला महत्वपूर्ण थी, बाकी सब गौण।

इस अत्यधिक लगन का परिणाम उनके स्वास्थ्य पर पड़ा। लगातार ठंड में रहने और अपने शरीर की उपेक्षा करने के कारण उन्हें गंभीर सर्दी लग गई। यह बीमारी धीरे-धीरे इतनी बढ़ गई कि उसकी मार उनकी श्रवण शक्ति पर पड़ी और उनकी सुनने की क्षमता कम होने लगी। एक कलाकार के लिए यह किसी बड़े आघात से कम नहीं था, क्योंकि संवाद और सामाजिक संपर्क भी जीवन का हिस्सा होते हैं। लेकिन रेनॉल्ड्स ने इस शारीरिक क्षति को कभी अभिशाप नहीं माना। जब किसी ने उनसे कहा कि यदि वे इटली नहीं जाते तो उनकी सुनने की क्षमता सुरक्षित रहती, तो उनका उत्तर उनके चरित्र की ऊंचाई को दर्शाता है।

उन्होंने गर्व और संतोष के साथ कहा कि यदि कला को निखारने के लिए उन्हें सौ बार भी अपनी सुनने की क्षमता गंवानी पड़े, तो वे उसे भी स्वीकार करेंगे। उनके लिए कला के साथ समझौता करना सबसे बड़ा नुकसान होता। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इटली जाकर ही वे चित्रों में छिपे गूढ़ अर्थों को समझ पाए, जो किसी पुस्तक या सतही अध्ययन से संभव नहीं था। यह कथन केवल आत्मबलिदान का प्रदर्शन नहीं, बल्कि उस मानसिकता का परिचायक है जिसमें उत्कृष्टता के लिए किसी भी सीमा तक जाने की तैयारी होती है।

रेनॉल्ड्स का यह दृष्टिकोण उन्हें साधारण कलाकारों से अलग करता है। वे मानते थे कि कला में महानता तभी आती है जब कलाकार अपने मापदंडों से समझौता न करे। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि सीखने की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती। वे पहले से ही प्रसिद्ध और सम्मानित थे, फिर भी उन्होंने स्वयं को अधूरा मानते हुए नए सिरे से सीखने का साहस किया। यह विनम्रता ही उन्हें और ऊंचा उठाती है। राफेल की संतुलित रचनात्मकता और माइकल एंजेलो की शक्तिशाली अभिव्यक्ति से उन्होंने जो सीखा, वह आगे चलकर उनकी अपनी कृतियों में स्पष्ट दिखाई दिया।

उनकी चित्रकला में गरिमा, भावनात्मक गहराई और शास्त्रीय अनुशासन का अनूठा संगम देखने को मिलता है। उन्होंने न केवल सुंदर चेहरे उकेरे, बल्कि व्यक्तित्व और आत्मा को भी कैनवास पर उतारने का प्रयास किया। यही कारण है कि उनकी कृतियां समय की सीमा से परे आज भी दर्शकों को प्रभावित करती हैं। उनकी कला में जो स्थायित्व है, वह उसी साधना का परिणाम है, जिसे उन्होंने इटली की ठंडी दीवारों के बीच सहन किया।

आज के समय में, जब त्वरित सफलता और आसान रास्तों की चाह आम हो गई है, रेनॉल्ड्स का जीवन हमें एक गहरी सीख देता है। वह बताता है कि वास्तविक उपलब्धि बिना त्याग के नहीं मिलती। चाहे वह कला हो, विज्ञान हो या कोई और क्षेत्र, उत्कृष्टता के लिए असुविधाओं को स्वीकार करना पड़ता है। रेनॉल्ड्स ने यह सिद्ध कर दिया कि शारीरिक क्षति भी तब छोटी लगने लगती है, जब लक्ष्य बड़ा हो और नीयत सच्ची हो।

उनकी सुनने की क्षमता भले ही कम हो गई, लेकिन उनकी कला की आवाज सदियों बाद भी सुनाई देती है। यह आवाज समर्पण, साहस और सिद्धांतों की है। सर जोशुआ रेनॉल्ड्स का जीवन इस बात का प्रमाण है कि महानता संयोग से नहीं मिलती, बल्कि उसे गढ़ा जाता है। कला के लिए उनका अटूट समर्पण ही उन्हें अमर बनाता है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना देता है।

कर वसूली के साथ जरूरी सुविधाएं भी तो मिलें

एक नागरिक महीने भर श्रम करता है। वेतन पाता है। उसी वेतन पर वह आयकर देता है। लेकिन कर यात्रा यहीं समाप्त नहीं होती। कर कटने के बाद बची हुई आय से जब वह दवा खरीदता है। भोजन करता है। ईंधन भरवाता है। बच्चों की शिक्षा या किसी सेवा का भुगतान करता है तो हर कदम पर उसे वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) देना पड़ता है। सरकार का तर्क है कि आयकर कमाने पर है और जीएसटी व्यय पर। तकनीकी रूप से यह बात सही हो सकती है। लेकिन आम नागरिक के लिए आय का स्रोत एक ही होता है और खर्च भी उसी सीमित राशि से होता है। पैसा वही रहता है। केवल कर के नाम बदल जाते हैं। बोझ कम नहीं होता। यह पीड़ा तब और गहरी हो जाती है जब नागरिक सत्ता शीर्ष पर बैठे लोगों की जीवनशैली देखता है। प्रश्न तब केवल कानूनी नहीं रह जाता बल्कि नैतिक हो जाता है। आम नागरिक पूछता है कि जब उसने अपनी आय पर कर चुका दिया तो जीवन की हर जरूरत पर दोबारा कर क्यों? लोकतंत्र में इस प्रश्न को असंगत नहीं कहा जा सकता।

कानूनी सच्चाई यह है कि सांसदों और विधायकों का वेतन आयकर के दायरे में आता है और वे कर देते हैं। लेकिन असमानता वेतन में नहीं बल्कि सुविधाओं में है। सरकारी आवास, बिजली- पानी, यात्रा, चिकित्सा, सुरक्षा व स्टाफ जैसी सभी सुविधाओं का बाजार मूल्य अत्यंत ऊंचा है। लेकिन सत्ता में बैठे लोगों को यह या तो मुफ्त मिलता है या नाममात्र शुल्क पर। वहीं आम नागरिक इन्हीं सुविधाओं के लिए अपनी कर देने के बाद बची आय से पूरा भुगतान करता है। कागजों में कर समान है लेकिन जीवन की वास्तविक लागत में गहरी खाई दिखती है। इस असंतुलन को और उजागर करती है उद्घाटन और दौरों की संस्कृति। मामूली से कार्यक्रम के लिए भी नेता विमान या हेलिकॉप्टर से पहुंचते हैं। सुरक्षा के नाम पर लंबे काफिले चलते हैं। सड़कें रोकी जाती हैं। प्रशासनिक तंत्र उसी आयोजन में झोंक दिया जाता है। इन सब पर होने वाला खर्च लाखों और कई बार करोड़ों में होता है। यह खर्च देश के राजस्व से होता है। यानी उसी करदाता के पैसे से जो स्वयं यातायात में फंसा हुआ अपने ईंधन का पूरा मूल्य और कर चुका रहा होता है।

कृषि आय को कर से मुक्त रखने का निर्णय अपने समय में मानवीय और आवश्यक था। खेती जोखिम भरा और मौसम पर निर्भर है। छोटे किसान की आय अस्थिर होती है। लेकिन समय के साथ इस छूट का दुरुपयोग भी बढ़ा। अनेक गैर किसान और प्रभावशाली लोग अपनी आय को कृषि आय दिखाकर टैक्स से बचते रहे। असली किसान तक इस व्यवस्था का कितना लाभ पहुंचा यह आज भी स्पष्ट नहीं। इससे कर व्यवस्था के प्रति अविश्वास और गहराता है।

मूल प्रश्न इससे भी आगे का है। जब नागरिक कर देता है तो बदले में उसे क्या मिलता है। शिक्षा आज भी निजी संस्थानों पर निर्भर है। स्वास्थ्य सेवाएं महंगी हैं। वृद्धावस्था की सुरक्षा सीमित है। रोजगार अनिश्चित है। कर चुकाने के बाद भी जीवन की बुनियादी जिम्मेदारियां नागरिक को स्वयं उठानी पड़ती हैं। ऐसे में कर राष्ट्र निर्माण की साझेदारी नहीं बल्कि मजबूरी जैसा लगने लगता है।

यही अंतर भारत और डेनमार्क जैसे देशों में दिखाई देता है। वहां कर अधिक है, लेकिन बदले में नागरिक को शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा की ठोस गारंटी मिलती है। इसलिए कर वहां बोझ नहीं बनता। भारत में कर दरें कम बताई जाती हैं लेकिन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर जोड़ दिए जाएं तो मध्यम वर्ग पर वास्तविक बोझ कहीं अधिक दिखाई देता है। सुविधाएं फिर भी सीमित रहती हैं।

यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह दोहरी कर व्यवस्था न किसी एक दल की देन है और न ही किसी एक सरकार की। यह आजादी के बाद विकसित हुई कर संरचना का परिणाम है। समय बदला। अर्थव्यवस्था बदली। नागरिक की अपेक्षाएं बदलीं। लेकिन कर व्यवस्था का मूल स्वरूप लगभग जस का तस बना रहा। इसलिए आज यह असहज लगने लगी है। यह आरोप का विषय नहीं बल्कि सुधार का अवसर है। आवश्यकता यह है कि कर सुधार की शुरुआत सत्ता के आचरण से हो। उद्घाटन संस्कृति पर नियंत्रण लगे। हवाई यात्राएं केवल अपरिहार्य स्थितियों में हों। काफिलों का मानकीकरण हो। हर सरकारी दौरे और कार्यक्रम के खर्च का सार्वजनिक विवरण अनिवार्य किया जाए। जब नागरिक देखेगा कि सत्ता स्वयं संयम बरत रही है तब वह कर को बोझ नहीं बल्कि सहभागिता मानेगा।

कर केवल वसूली नहीं बल्कि यह एक सामाजिक समझौता है। नागरिक कहता है कि मैं अपनी मेहनत का हिस्सा दूंगा, क्योंकि राज्य मेरी सामूहिक जिम्मेदारी लेगा। आज नागरिक कर का विरोध नहीं कर रहा। वह कर न्याय की मांग कर रहा है। वह कह रहा है कि मुझसे कर वसूलो, लेकिन पहले यह सिद्ध करो कि सत्ता भी उतनी ही उत्तरदायी और संवेदनशील है जितना एक आम नागरिक को होना पड़ता है।

अभियान

महाभारत का रहस्य और विजय की शक्ति: मां बगुलामुखी की साधना का अद्भुत प्रसंग

भारतीय सनातन परंपरा में देवी उपासना केवल आस्था का विषय नहीं रही है, बल्कि उसे जीवन, युद्ध, नीति और विजय से भी गहराई से जोड़ा गया है। जब-जब धर्म संकट में पड़ा, तब-तब देवशक्तियों का आवाहन हुआ। महाभारत जैसा विराट और निर्णायक युद्ध केवल शस्त्रों, सेनाओं और रणनीतियों से नहीं जीता गया, बल्कि उसके पीछे आध्यात्मिक शक्तियों, मंत्र-साधना और देवी कृपा की भी अहम भूमिका रही। इन्हीं रहस्यमय तथ्यों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और कम चर्चित प्रसंग है मां बगुलामुखी की उपासना, जिसे भगवान श्रीकृष्ण और पांडवों ने महाभारत युद्ध से पूर्व किया था।

मां बगुलामुखी दस महाविद्याओं में आठवीं महाविद्या मानी जाती हैं। वे शक्ति के उस उग्र और रहस्यमय स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो शत्रुओं की बुद्धि, वाणी और संकल्प को स्तंभित कर देता है। "बगुला" शब्द का अर्थ ही होता है जड़ कर देना, रोक देना। यही कारण है कि मां बगुलामुखी को शत्रुनाश, विजय, वाक्सिद्धि और भयमुक्ति की देवी कहा गया है। कलियुग में भी उनकी उपासना को अत्यंत प्रभावशाली माना गया है, विशेषकर तब, जब व्यक्ति चारों ओर से विरोध, षड्यंत्र, अन्याय और मानसिक दबाव से घिरा हो। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जब महाभारत युद्ध अवश्यंभावी हो गया और यह स्पष्ट हो गया कि युद्ध केवल बाहुबल से नहीं, बल्कि मानसिक और बौद्धिक स्तर पर भी लड़ा जाएगा, तब भगवान श्रीकृष्ण ने पांडवों को शक्ति साधना का मार्ग दिखाया। श्रीकृष्ण स्वयं योगेश्वर थे, उन्हें भविष्य, परिणाम और कर्म का पूर्ण ज्ञान था। वे जानते थे कि कौरव पक्ष में केवल सेना नहीं, बल्कि शकुनि जैसी कुटिल बुद्धि, द्रोण और भीष्म जैसे महान योद्धा और कर्ण जैसा दानवीर भी मौजूद है। ऐसे में विजय के लिए केवल अस्त्र-शस्त्र पर्याप्त नहीं होंगे।

कहा जाता है कि युद्ध से पहले श्रीकृष्ण और पांडवों ने मां बगुलामुखी की विशेष साधना की। इस साधना का उद्देश्य था शत्रुओं की बुद्धि को भ्रमित करना, उनके निर्णयों को गलत दिशा में मोड़ देना और उनके अहंकार व षड्यंत्रों को निष्फल करना। महाभारत में अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं, जहां कौरव पक्ष बार-बार स्वयं की ही गलतियों से पराजय की ओर बढ़ता दिखाई देता है। दुर्योधन का हठ, कर्ण का समय पर कवच-कुंडल त्याग, द्रोण का भावनात्मक रूप से विचलित होना और भीष्म का प्रतिज्ञाओं में बंध जाना—इन सभी घटनाओं को आध्यात्मिक दृष्टि से देखने पर मां बगुलामुखी की स्तंभन शक्ति की झलक मिलती है।

मां बगुलामुखी की साधना का मूल तत्व वाणी और बुद्धि पर नियंत्रण है। यही कारण है कि उनकी पूजा में पीले रंग का विशेष महत्व बताया गया है। पीला रंग ज्ञान, स्थिरता और गुरुत्व का प्रतीक माना जाता है। साधक को स्नान-ध्यान के बाद पीले वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर बैठकर पूजा करने की परंपरा इसी कारण से है। यह केवल बाहरी नियम नहीं, बल्कि साधक के मन और चेतना को एक विशेष तरंग में लाने की प्रक्रिया है। जब मन स्थिर होता है, तभी मंत्र की शक्ति जाग्रत होती है।

मां बगुलामुखी की पूजा में हल्दी का विशेष प्रयोग किया जाता है। हल्दी केवल एक औषधि नहीं, बल्कि सात्विक ऊर्जा का प्रतीक है। देवी को हल्दी का तिलक करना, पीले पुष्प और पीले फल अर्पित करना, यह दर्शाता है कि साधक अपने भीतर की तमसिक और राजसिक वृत्तियों को त्यागकर शुद्ध शक्ति की शरण में जा रहा है। कहा जाता है कि जो व्यक्ति श्रद्धा और पूर्ण विश्वास के साथ मां बगुलामुखी की उपासना करता है, उसकी रक्षा स्वयं देवी करती हैं।

मां बगुलामुखी का मंत्र अत्यंत प्रभावशाली माना गया है—

'ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।'

यह मंत्र केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली कंपन है, जो साधक और ब्रह्मांडीय ऊर्जा के बीच सेतु का काम करता है। धार्मिक मान्यता है कि इस मंत्र के जाप से शत्रुओं की नकारात्मक शक्ति निष्क्रिय हो जाती है और साधक के मार्ग में आने वाली बाधाएं स्वतः दूर होने लगती हैं।

महाभारत के युद्ध में बार-बार यह देखने को मिलता है कि कौरव पक्ष अपनी ही वाणी और निर्णयों से स्वयं को नुकसान पहुंचाता है। दुर्योधन का अपमानजनक व्यवहार, शकुनि की चालें और कर्ण का अहंकार—इन सभी ने अंततः कौरवों को विनाश की ओर पहुंचाया। इसके विपरीत, पांडव पक्ष में श्रीकृष्ण का मार्गदर्शन, अर्जुन का धैर्य और युधिष्ठिर का संयम दिखाई देता है। यह संतुलन केवल नीति का नहीं, बल्कि आध्यात्मिक साधना का भी परिणाम माना जाता है।

आज के समय में मां बगुलामुखी की पूजा केवल युद्ध या शत्रु नाश तक सीमित नहीं है। आधुनिक जीवन में शत्रु केवल व्यक्ति नहीं होते, बल्कि परिस्थितियां, मानसिक तनाव, कानूनी विवाद, नकारात्मक विचार और भय भी शत्रु के समान होते हैं। ऐसे में मां बगुलामुखी की उपासना को वाक् सिद्धि, आत्मविश्वास, साहस और मानसिक शांति का माध्यम माना जाता है। न्यायिक मामलों में फंसे लोग, राजनीति या प्रतिस्पर्धात्मक क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्ति और मानसिक अस्थिरता से जूझ रहे साधक विशेष रूप से इस देवी की शरण में जाते हैं।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मां बगुलामुखी की पूजा से व्यक्ति के भीतर एक अद्भुत आत्मबल का संचार होता है। उसकी वाणी में प्रभाव आता है, निर्णय क्षमता मजबूत होती है और वह विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को स्थिर रख पाता है। यही स्थिरता विजय का सबसे बड़ा आधार होती है। महाभारत भी अंततः इसी स्थिरता और धर्म की विजय का प्रतीक है।

इस प्रकार, मां बगुलामुखी की साधना केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन के संघर्षों में संतुलन, साहस और विजय प्राप्त करने की एक गूढ़ आध्यात्मिक प्रक्रिया है। महाभारत के प्रसंग से जुड़ा यह रहस्य हमें यह सिखाता है कि जब मन, बुद्धि और वाणी नियंत्रित हों, तब सबसे बड़ा युद्ध भी जीता जा सकता है। यही मां बगुलामुखी की वास्तविक कृपा और शक्ति का सार है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व : वीर हमीरजी गोहिल के शौर्य एवं राष्ट्रीय अस्मिता के पुनरुत्थान का उत्सव

अनंत ज्योति सोमनाथ : स्वाभिमान पर्व में गूंजेगा 1000 वर्ष के संघर्ष तथा आस्था का इतिहास

(जीएनएस)। गांधीनगर : भारतीय संस्कृति के राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा अजेय आस्था के प्रतीक समान सोमनाथ महादेव के सान्निध्य में जब सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मनाया जा रहा है, तब एक ऐसे वीर योद्धा का स्मरण अनिवार्य हो जाता है, जिन्होंने सोमनाथ की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। वह नाम यानी वीर हमीरजी गोहिल। सोमनाथ का इतिहास केवल आक्रमणों का ही नहीं, अपितु आक्रमणों के विरुद्ध संघर्ष कर शौर्य दिखाने वाले वीरों का भी है। जब आततायी जफरखान की सेना ने सोमनाथ पर आक्रमण किया, तब लाठी के राजकुँवर हमीरजी गोहिल ने सोमनाथ के शिवलिंग की रक्षा करने का संकल्प किया था। नवविवाहित पत्नी का संग और राजसिंहासन का मोह त्यागकर वे सोमनाथ की रक्षा के लिए निकल पड़े थे। मार्ग में वेगडाजी भील जैसे सेनानी उनके साथ जुड़े। इस छोटी-सी सेना ने विशाल आक्रमणकारी सेना के विरुद्ध जो प्रतिकार किया, वह आज भी इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों से अंकित है। सोमनाथ मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार के निकट आज भी वीर हमीरजी गोहिल का स्मारक स्तंभ तथा उनकी भव्य प्रतिमा अडिग खड़ी है।

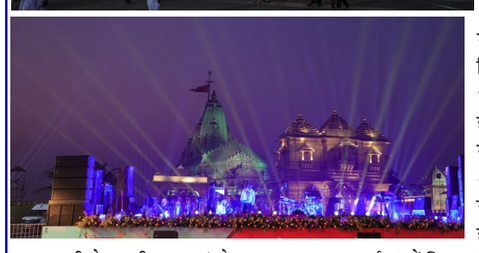

वीर हमीरजी गोहिल की प्रतिमा

हाथ में तलवार तथा चेहरे पर स्वाभिमान से युक्त उनकी प्रतिमा आने वाली पीढ़ी को सिखाती है कि राष्ट्र एवं धर्म के गौरव के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की परंपरा इस धरती की तासीर है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मनाया जा रहा सोमनाथ स्वाभिमान पर्व केवल अतीत को याद करने का उत्सव नहीं, अपितु हमीरजी जैसे शहीदों के बलिदान से सिंचित इस धरती की अजेयता का जश्न है। आगामी 11 जनवरी को निकलने वाली भव्य शौर्य यात्रा, जो हमीरजी गोहिल की प्रतिमा से सभा स्थल तक जाएगी, सच्चे अर्थ में शहीदों की विरासत को दी जाने वाली श्रद्धांजलि है। 108 घुड़सवारों तथा जय सोमनाथ के जयघोष के साथ निकलने वाली यह यात्रा दर्शाएगी कि हमीरजी का शौर्य आज भी भारत की युवा पीढ़ी में जीवंत है।

वीर हमीरजी गोहिल का स्मारक स्तंभ

यह वह पवित्र स्थल है, जहाँ लड़ते-लड़ते हमीरजी ने वीरगति प्राप्त की थी। प्रत्येक श्रद्धालु सोमनाथ दादा के दर्शन को जाने से पहले इस शहीद को नमन करता है।

क. मा. मुनशी ने अपनी पुस्तक 'सोमनाथ : द श्राइन इटर्नल' में जिस अस्मिता का उल्लेख किया है, उस अस्मिता का जीवंत लहू यानी वीर हमीरजी गोहिल। सोमनाथ मंदिर राख से पुनः उठ खड़ा हुआ, कारण कि हमीरजी जैसे वीरों ने उसे अपने रक्त से सींचा था। आज जब सोमनाथ स्वर्णिम युग में प्रवेश कर रहा है, तब वीर हमीरजी का स्मारक स्तंभ हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता तथा आस्था मुफ्त नहीं मिलती हैं। इनके लिए शौर्य तथा बलिदान की आवश्यकता पड़ती है।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व : भारत के अखंड स्वाभिमान की अभिव्यक्ति

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने सूरत रेलवे स्टेशन से सूरत जिले के लगभग 1300 श्रद्धालुओं की सूरत-वेरावळ स्पेश ट्रेन को प्रस्थान कराया

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत श्रद्धालु करेंगे सोमनाथ दादा के दिव्य दर्शन

(जीएनएस)। गांधीनगर : भारत की प्राचीन संस्कृति, आध्यात्मिक परंपरा तथा राष्ट्रीय गौरव के जीवंत केन्द्र सोमनाथ मंदिर में आयोजित सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का भव्य प्रारंभ हुआ है, तब हजारों श्रद्धालु देशभर से दादा के दर्शनार्थ जा रहे हैं। गुरुवार को सूरत रेलवे स्टेशन से सूरत से वेरावळ की स्पेशल ट्रेन को उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने फ्लैगऑफ देकर प्रस्थान कराया। भारत माता की जय, हर-हर महादेव, ओम नमः शिवाय के जयकारे के साथ सूरत जिले के लगभग 1300 बड़े-बुजुर्ग, युवा सहित श्रद्धालुओं से भरी ट्रेन को रवाना किया गया।

श्री संघवी ने इस अवसर पर कहा कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व भारत के स्वाभिमान, ऐतिहासिक धरोहर तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान का सशक्त अभिव्यक्ति समान कार्यक्रम है, जिसमें भाग लेने के लिए देशभर से लाखों श्रद्धालु सोमनाथ पधार रहे हैं। 72 घण्टे के सामूहिक ओमकार नाद के साथ शिव मंदिर गूज रहे हैं। ऋषिकुमारों के शंखनाद तथा संतों के सान्निध्य में ओम नमः शिवाय का जाप सोमनाथ मंदिर में हो रहा है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं को शुभकामनाएँ दीं।

इस अवसर पर महापौर श्री दक्षेशभाई मावाणी, जिला कलेक्टर डॉ. सौरभ पारधी, पुलिस आयुक्त श्री अनुपम सिंह गहलोत, अग्रणी श्री झंखनाबेन पटेल, श्री वी. डी. झालावाडिया, श्री अनिल कुमार शुक्ला तथा अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि सोमनाथ पर गजनवी के आक्रमण के 1000 वर्ष तथा मंदिर जीर्णोद्धार के 75 वर्ष का शुभ समन्वय हुआ है, तब सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत 8 से 10 जनवरी के दौरान तीन दिवसीय महोत्सव में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित शौर्य यात्रा का भी आयोजन किया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आगामी 10 व 11 जनवरी के दौरान सोमनाथ मंदिर में सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में सहभागी होंगे।

सोना वायदा में 1184 रुपये और चांदी वायदा में 11626 रुपये की गिरावट: क्रूड ऑयल वायदा में 83 रुपये की वृद्धि

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 198487.48 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 48960.17 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 149523.05 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 35301 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3067.87 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 37268.42 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 137996 रुपये के भाव पर खूलकर, 137996 रुपये के दिन के उच्च और 136443 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 138009 रुपये के पिछले बंद के सामने 1184 रुपये या 0.86 फीसदी लुढ़ककर 136825 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा 1157 रुपये या 1.02 फीसदी गिरकर 111921 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा 118 रुपये या 0.84 फीसदी गिरकर 13995 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 137829 रुपये के भाव पर खूलकर, 137829 रुपये के दिन के उच्च और 136400 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 1177 रुपये या 0.85 फीसदी गिरकर 136800 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 138897 रुपये के भाव पर खूलकर, 138897 रुपये के दिन के उच्च और 137196 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 138799 रुपये के पिछले बंद के सामने 1191 रुपये या 0.86 फीसदी गिरकर 137608 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ।

कमोडिटी वायदाओं में 48960.17 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 149523.05 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर: सोना-चांदी के वायदाओं में 37268.42 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार: बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 35301 पॉइंट के स्तर पर

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 251041 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 251889 रुपये और नीचे में 238010 रुपये पर पहुंचकर, 250605 रुपये के पिछले बंद के सामने 11626 रुपये या 4.64 फीसदी गिरकर 238979 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 11471 रुपये या 4.53 फीसदी औंधकर 241600 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 11506 रुपये या 4.55 फीसदी गिरकर 241589 रुपये प्रति किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 7664.00 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा 41.75 रुपये या 3.19 फीसदी घटकर 1266 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 3.05 रुपये या 0.98 फीसदी घटकर 306.6 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा 3.5 रुपये या 1.13 फीसदी औंधकर 306.65 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा जनवरी वायदा 2.55 रुपये या 1.32 फीसदी गिरकर 190.25 रुपये प्रति किलो हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 3800.89 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जनवरी वायदा 5068 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 5129 रुपये और नीचे में 5055 रुपये पर पहुंचकर, 83 रुपये या 1.65 फीसदी बढ़कर 5124 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जनवरी वायदा 79 रुपये या 1.57 फीसदी की मजबूती के साथ 5124 रुपये प्रति बैरल बोला गया। इनके अलावा नैचुरल गैस जनवरी वायदा सत्र के आरंभ में 324.2 रुपये के भाव पर खूलकर, 326.6 रुपये के दिन के उच्च और 312.4 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 321.4 रुपये के पिछले बंद के सामने 9 रुपये या 2.8 फीसदी लुढ़ककर 312.4 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जनवरी वायदा 8.6 रुपये या 2.68 फीसदी लुढ़ककर 312.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जनवरी वायदा सत्र के आरंभ में 1000.9 रुपये के भाव पर खूलकर, 20 पैसे या 0.02 फीसदी चढ़कर 998.8 रुपये प्रति किलो हुआ।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 13539.19 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 23729.23 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 6375.46 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 491.01 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 182.93 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 564.87 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 790.45 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2998.92 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व

केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत सोमनाथ में बैठक की

- प्रधानमंत्री के कार्यक्रम की तैयारियों के संबंध में केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने समीक्षा की
- प्रवक्ता मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी सहित महानुभावों की उपस्थिति
- केंद्रीय मंत्री ने शौर्य यात्रा के रूट शंख सर्कल से हमीरजी गोहिल प्रतिमा सहित सोमनाथ परिसर का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया
- अविनाशी सनातन संस्कृति और अटूट आस्था का प्रतीक है प्रथम ज्योतिर्लिंग सोमनाथ : केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत

(जीएनएस)। गांधीनगर : द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रथम ज्योतिर्लिंग की भूमि पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 10 और 11 जनवरी को 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' में सहभागी होने के लिए पधारने वाले हैं। इस अवसर पर केंद्रीय संस्कृति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने गुरुवार को प्रधानमंत्री के सोमनाथ प्रवास तथा शौर्य यात्रा के रूट सहित विभिन्न कार्यक्रमों को लेकर स्थल समीक्षा की तथा अन्य तैयारियों का विवरण प्राप्त किया। केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सोमनाथ महादेव के समक्ष शीश झुकाने के बाद 'सागर दर्शन' में एक बैठक आयोजित की और 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' अंतर्गत 8, 9 और 10 जनवरी को आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित अन्य तैयारियों के संबंध में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त की। सागर दर्शन में आयोजित बैठक पूर्ण होने के पश्चात केंद्रीय मंत्री ने शौर्य यात्रा के रूट शंख सर्कल से हमीरजी गोहिल प्रतिमा तक तथा वहाँ से मंदिर परिसर तक के स्थलों का मंत्रियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों के साथ निरीक्षण किया।

केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम ज्योतिर्लिंग सोमनाथ देश के करोड़ों लोगों के लिए आस्था का प्रतीक है।

सोमनाथ अविनाशी-शाश्वत सनातन संस्कृति और अटूट आस्था का प्रतीक है। तलवार की ताकत के बल पर सनातन को मिटाने का प्रयास किया गया, लेकिन उसमें असफलता मिली और सनातन की शक्ति में उतरोत्तर वृद्धि होती रही है।

केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि गजनवी ने सोमनाथ पर आक्रमण किया, लेकिन विध्वंस के सामने निर्माण की शक्ति विजयी हुई। सोमनाथ पर बार-बार हुए आक्रमणों के बावजूद वह सनातन, अखंड और अविनाशी बना रहा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से भविष्य की पीढ़ी को भी सनातन संस्कृति और भारत की प्राचीन धरोहर की पहचान मिले तथा वीरों के बलिदान और योगदान की गाथाओं की जानकारी मिले; इस दिशा में कार्य किया जा रहा है ।

सोमनाथ पर गजनवी के आक्रमण के 1000 वर्ष और मंदिर के जीर्णोद्धार के 75 वर्ष का शुभ समन्वय स्थापित हुआ है। जिन शक्तियों ने भारत में अविनाशी चेतना को मिटाने का प्रयास किया था, उनके प्रयास पूरी तरह विफल रहे। इस प्रकार सोमनाथ अटूट आस्था का केंद्र और सांस्कृतिक धरोहरों के पुनर्जागरण का केंद्र बना है।

सोमनाथ महादेव मंदिर परिसर में शंखनाद के साथ 72 घंटे के अखंड ॐकार जाप का भव्य शुभारंभ

- केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, प्रवक्ता मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, शिक्षा मंत्री श्री डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा की उपस्थिति में हुआ दिव्य शुभारंभ
- गगनभेदी शंखनाद के साथ 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' का शुभारंभ
- गुजरात भर से आए 2500 ऋषि कुमारों-ब्राह्मणों द्वारा भव्य जाप प्रारंभ किए जाने पर अरब सागर तट पर अद्भुत आध्यात्मिक चेतना की अनुभूति; देशभर से आए श्रद्धालु भी ॐकार मंत्रोच्चार में मंत्रमुग्ध हुए
- अग्निदेवता की साक्षी में सोमनाथ में गूंजा अखंड ॐकारनाद
- सोमनाथ महादेव के साथ देशभर के शिवालय ॐकार मंत्र जाप से गूंज उठे

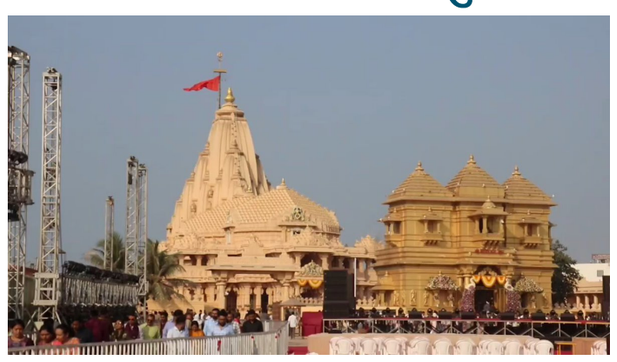

(जीएनएस)। गांधीनगर : समग्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रथम ज्योतिर्लिंग सोमनाथ मंदिर में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' मनाया जा रहा है। इसके अंतर्गत 8 जनवरी की सुबह सोमनाथ महादेव के समक्ष भव्य एवं दिव्य 72 घंटे के अखंड ॐकार जाप मंत्रोच्चार का शुभारंभ हुआ। केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत की उपस्थिति में गगनभेदी शंखनाद, भगवान शिव को प्रिय तालवाद्य डमरू के नाद तथा अखंड ॐकार की गूंज के साथ 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' का शुभारंभ हुआ। केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत सहित कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा एवं जूनागढ़ के सांसद राजेशभाई चुडासमा ने शंखनाद में सहभागिता कर 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' का शुभारंभ कराया। स्वयं के अंतर का नाद अर्थात ॐकार स्व में तल्लीन कर परम चेतना को जाग्रत करने वाला नाद है ॐकारनाद। 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' अंतर्गत गुजरात भर से सोमनाथ पधारे हुए लगभग 2500 ऋषि कुमारों द्वारा 72 घंटे तक अखंड ॐकार नाद गूंजेगा, जिसका प्रथम सत्र भव्य रूप से प्रारंभ हुआ। इसके साथ ही सौराष्ट्र, कच्छ, गुजरात सहित देशभर के शिवालयों में भी 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' के अंतर्गत ॐकार जाप का पाठ किया गया।

पवित्र अग्नि की साक्षी में शंखनाद, डमरू के नाद और ऋषि कुमारों द्वारा निरंतर उच्चारित पवित्र ॐकार नाद से समग्र वातावरण आध्यात्मिकता से परिपूर्ण हो गया।

ऋषि कुमारों के साथ इस पवित्र ॐकार नाद में श्रद्धालु भी भावपूर्वक सहभागी बने। मंत्रियों ने भी प्रतीक स्वरूप शंख बजाकर ऋषि कुमारों का उत्साहवर्धन किया। केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र शेखावत, मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, मंत्री श्री प्रद्युमनभाई वाजा सहित गणमान्य अतिथियों ने भी ऋषि कुमारों के साथ बैठकर ॐकार जाप किया और शिव भक्तों से इसमें सहभागी होने का अनुरोध किया।

कांदिवली–बोरीवली सेक्शन पर छठी लाइन के कार्य के संबंध में पश्चिम रेलवे का मेजर ब्लॉक

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा कांदिवली और बोरीवली सेक्शन के बीच छठी लाइन के निर्माण कार्य को पूरा करने के लिए 20/21 दिसंबर, 2025 की रात से 30 दिनों का ब्लॉक लिया जा रहा है, जो 18 जनवरी, 2026 तक जारी रहेगा। इस ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेन सेवाएं प्रभावित होंगी।

आंशिक निरस्त होने वाली ट्रेनें:

- 10 जनवरी, 2026 की ट्रेन संख्या 19418 अहमदाबाद–बोरीवली एक्सप्रेस वसई रोड पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इस प्रकार यह ट्रेन वसई रोड-बोरीवली के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।
- 11 जनवरी, 2026 की ट्रेन संख्या 19417 बोरीवली–अहमदाबाद एक्सप्रेस वसई रोड से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इस प्रकार यह ट्रेन बोरीवली-वसई रोड के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

री-शेड्यूल होने वाली ट्रेनें:

- 10 जनवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12902 अहमदाबाद–दादर एक्सप्रेस अपने मार्ग में 20 मिनट री-शेड्यूल होगी।
- 10 जनवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19218 वेरावल–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस 45 मिनट री-शेड्यूल होगी, अर्थात यह ट्रेन वेरावल से 12:35 बजे प्रस्थान करेगी।
- 11 जनवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22953 मुंबई सेंट्रल–अहमदाबाद गुजरात सुपरफास्ट एक्सप्रेस 30 मिनट री-शेड्यूल होगी, अर्थात यह ट्रेन 06:10 बजे प्रस्थान करेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि उपर्युक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा की योजना बनाएं।

उत्तर पश्चिम रेलवे के किशनगढ़ स्टेशन पर पोरबंदर मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस को मिला अतिरिक्त ठहराव

(जीएनएस)। उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार अजमेर एवं जयपुर मंडल के अंतर्गत कुछ ट्रेनों को प्रायोगिक आधार पर अतिरिक्त ठहराव प्रदान किया गया है। इसी क्रम में पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल से संचालित ट्रेन संख्या 19269 / 19270 पोरबंदर–मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस को राजस्थान के किशनगढ़ स्टेशन पर ठहराव प्रदान किया गया है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इस ठहराव का विवरण निम्नानुसार है—

- ट्रेन संख्या 19269 पोरबंदर–मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस, जो पोरबंदर से दिनांक 09 जनवरी, 2026 से प्रस्थान करेगी, उसका किशनगढ़ स्टेशन पर आगमन समय 12:22 बजे तथा प्रस्थान समय 12:24 बजे रहेगा।
- इसी प्रकार ट्रेन संख्या 19270 मुजफ्फरपुर–पोरबंदर एक्सप्रेस, जो मुजफ्फरपुर से दिनांक 11 जनवरी, 2026 से प्रस्थान करेगी, उसका किशनगढ़ स्टेशन पर आगमन समय 20:11 बजे तथा प्रस्थान समय 20:13 बजे निर्धारित किया गया है।
- यह ठहराव प्रायोगिक आधार पर प्रदान किया गया है, जो अगले आदेश तक प्रभावी रहेगा। इस अतिरिक्त ठहराव से किशनगढ़ एवं आसपास के क्षेत्रों के यात्रियों को आवागमन में उल्लेखनीय सुविधा प्राप्त होगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का प्रारंभ

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत गुरुवार को गांधीनगर स्थित प्राचीन और प्रसिद्ध धोळेश्वर महादेव मंदिर से 72 घंटे के सामूहिक ओमकार नाद का प्रारंभ कराया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से इस सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का तीन दिवसीय उत्सव गुरुवार से प्रारंभ हो गया है। आज से 1000 वर्ष पहले 1026 में सोमनाथ मंदिर पर हुए हमले के विरुद्ध अटूट श्रद्धा, आस्था और सामूहिक शक्ति के संकल्प से आज सोमनाथ मंदिर भव्यता और दिव्यता के प्रतीक के रूप में अडिगता से खड़ा है। इस पराक्रम और करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का गौरव-महात्म्य प्रधानमंत्री की प्रेरणा और मार्गदर्शन में हो रहे सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के माध्यम से हो रहा है। इस पर्व में ओमकार नाद की ऊर्जा को सामूहिक ओमकार नाद से जोड़ने के लिए मंदिरों में 72 घंटे की ओमकार नाद की गूंज से भक्तिमय वातावरण का निर्माण होगा। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल भी गांधीनगर स्थित धोळेश्वर महादेव से इस ओमकार नाद में श्रद्धापूर्वक शामिल हुए। उन्होंने सभी से इस सामूहिक ओमकार नाद में सहभागी होने का अनुरोध करते हुए कहा कि हम सभी को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अपनी विरासत और अस्मिता के गौरव को और अधिक उजागर करने का अवसर मिला है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने लोगों से मंदिरों-देवालयों में होने वाले सामूहिक ओमकार नाद या अपने घर पर भी समय मिलने पर ओमकार मंत्र का स्मरण कर सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में जुड़ने की अपील की।

गूगल पर ज्ञानपिपासु सर्च कर रहे हैं 'सोमनाथ : द श्राइन इटर्नल' पुस्तक

(जीएनएस)। गांधीनगर : आततायी महमूद गजनवी के सोमनाथ मंदिर पर किए गए आक्रमण को 1000 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस विदेशी आक्रमणकारी द्वारा हुआ आक्रमण भारत की अस्मिता पर कुठाराघात समान था। इस एक हजार वर्ष के संदर्भ में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लिखे गए विशेष लेख में एक विशेष पुस्तक का उल्लेख किया गया था। इस पुस्तक के बारे में जानने के लिए जिज्ञासु गूगल सर्च इंजन चला रहे हैं।

यह पुस्तक यानी कनैयालाल माणेकलाल मुनशी द्वारा 1951 में लिखी गई 'सोमनाथ : द श्राइन इटर्नल' ! इस पुस्तक में भगवान श्री सोमनाथ के मंदिर के बारे में ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व का परिचय दिया गया है। प्रधानमंत्री द्वारा हुए उल्लेख के कारण हाल में यह पुस्तक चर्चा एवं पठन के केन्द्र में है। ऐसे में यह इस पुस्तक के बारे में और जानना रुचिप्रद होगा।

गुजरातियों के लिए गुजरात की अस्मिता के ज्योतिर्धर क. मा. मुनशी परिचय के मोहताज नहीं है। वे राजनीतिक पुरुष के अलावा एक अच्छे लेखक थे। उनकी पुस्तकों के केन्द्र में इतिहास एवं सांस्कृतिक आदि विषय रहे हैं। गुजरातियों को अंग्रेजी में लिखी पुस्तकें पढ़ने में बहुत खास आदत नहीं है। अंग्रेजी में भी गुजरात तथा गुजरात के इतिहास के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, जिसमें कनैयालाल मुनशी को भी सिरमौर माना जा सकता है। उनके द्वारा लिखित 'पाटणनी प्रभुता', 'जय सोमनाथ', 'गुजरातनो नाथ', 'भग्न पादुका', 'कृष्णावतार भाग 1 से 7' जैसी पुस्तकें पढ़ने से गुजरात के इतिहास के अलावा धार्मिक विभूतियों की दिलचस्प जानकारी स्थल-काल के साथ जानने को मिलती है।

सोमनाथ – द श्राइन इटर्नल पुस्तक में कनैयालाल मुनशी ने भगवान श्री सोमनाथ मंदिर का ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक परिचय दिया है। उन्होंने सोमनाथ मंदिर को भारत की अस्मिता का प्रतीक बताया है। क्यों यह मंदिर भारत की सांस्कृतिक धरोहर के लिए महत्वपूर्ण है ? इसका अहसास इस पुस्तक को पढ़ने से आ सकता है। हाल में सोमनाथ में सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मनाया जा रहा है, तब इस पुस्तक के बारे में भी जानना महत्वपूर्ण है।

यह पुस्तक भारतीय विद्या भवन की 'बुक्स यूनिवर्सिटी' श्रृंखला अंतर्गत प्रकाशित की गई है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति के मूलभूत मूल्यों का आधुनिक ज्ञान के साथ संयोजन करना है।

मुनशीजी ने इस पुस्तक का प्रथम संस्करण मई-1951 में सोमनाथ मंदिर की पुनर्स्थापना तथा ज्योतिर्लिंग प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर लिखा था। लेखक स्वयं स्वीकार करते हैं कि उन्होंने शैक्षणिक विद्वता के दावे के बिना, बल्कि एक अत्यंत श्रद्धालु तथा इतिहास के जिज्ञासु के रूप में यह पुस्तक बहुत ही कम समय में तैयार की थी, जिससे सोमनाथ के इतिहास को लोगों के समक्ष रखा जा सके।

इस पुस्तक का उद्देश्य उच्च शिक्षा एवं संस्कार देना है। इस पुस्तक द्वारा मानव गरिमा एवं नैतिक व्यवस्था (मोरल ऑर्डर) की स्थापना करने का प्रयास किया गया है, जिससे मनुष्य भगवान का सच्चा अंश बन सके।

पुस्तक मुख्यतः चार भागों में बँटी हुई है। पहले भाग में सोमनाथ की पौराणिक कथाएँ तथा इतिहास है, दूसरे भाग में रोमांस इन स्टोन यानी पत्थरों में उत्कीर्णित स्थापत्य है, तीसरे भाग में पुरातात्त्विक उत्खनन (एक्सकैवेशन्स) द्वारा मिले प्रमाण हैं और चौथे भाग में मुस्लिम इतिहासकारों के उल्लेखों तथा विभिन्न शिलालेखों का विवरण दिया गया है।

लेखक ने सोमनाथ को 'चंद्रना देव' (लॉर्ड ऑफ सोम) के रूप में वर्णित किया है और प्रभास क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व की चर्चा की है। मंदिर राख से पुनः खड़े होने वाले फिनिक्स पक्षी की तरह राख से पुनः उठ खड़ा होकर अनेक विनाश के बाद भी अजेय रहा है। पुस्तक में भगवान श्री कृष्ण के देहोत्सर्ग के पवित्र स्थान का भी उल्लेख है।

इस पुस्तक में सोमनाथ पर हुए आक्रमणों का विस्तृत इतिहास है। 1025 में महमूद गजनवी द्वारा किए गए विनाश से लेकर अलाउद्दीन खिलजी तथा औरंगजेब के काल तक के कठिन काल का वर्णन यहाँ देखने को मिलता है। मुनशीजी ने इस विनाश को केवल इमारत का विध्वंस नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मा पर हुए आघात के रूप में प्रस्तुत किया है।

पुस्तक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सोमनाथ के आधुनिक पुनरुत्था पर केन्द्रित है। 13 नवंबर, 1947 को सरदार वल्लभभाई पटेल ने जर्जर मंदिर के प्रांगण में समुद्री जल के साथ जो संकल्प किया था, उसे क. मा. मुनशी ने भारत के गौरव की पुनर्स्थापना के रूप में आलेखित किया है।

पुस्तक में बी. के. थापर द्वारा किए गए वैज्ञानिक उत्खनन की रिपोर्ट भी शामिल है। इस विभाग में पृथ्वी के गर्भ से प्राप्त प्राचीन मंदिर के स्तरों, शिलालेखों और मूर्तियों के आधार पर मंदिर के प्राचीन स्थापत्य की कड़ियों को जोड़ा गया है, जो इतिहास के विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

पुस्तक के नए संस्करणों में नए मंदिर के निर्माण की प्रगति के बारे में बताया गया है। नए मंदिर को 'कैलास महामेरु प्रसाद' के रूप में परिचित कराया गया है, जिसकी ऊँचाई 155 फीट है। पुस्तक में अनेक रेखाचित्र तथा फोटोग्राफ हैं, जो सोमनाथ की कलात्मक भव्यता के दर्शन कराते हैं।

'सोमनाथ : द श्राइन इटर्नल' केवल इतिहास की पुस्तक नहीं है, बल्कि भारतीय प्रजा की अखंडा श्रद्धा की प्रती है। मुनशीजी के मतानुसार सोमनाथ अनंत ज्योति है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी भारत को उसकी सांस्कृतिक जड़ों के साथ जोड़कर रखती है तथा

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा उनके लेख में उल्लेखित पुस्तक के बारे में जानने को लेकर हो रहा है सर्च

▸▸ सोमनाथ मंदिर के पुनरुद्धार अवसर पर लिखी गई पुस्तक में आलेखित है हमारी अस्मिता का इतिहास

रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव 9 जनवरी को 100 रेलवे अधिकारियों को 70वां अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार 2025 और सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले रेल मंडलों को 26 शील्ड प्रदान करेंगे

(जीएनएस)। भारतीय रेल, संगठन में अपनी बेहतरीन सेवा और उत्कृष्ट योगदान के लिए 100 कर्मठ कर्मचारियों और अधिकारियों को प्रतिष्ठित 70वें अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार 2025 से सम्मानित करने जा रहा है। पुरस्कार समारोह का आयोजन 9 जनवरी, 2026 को इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एंड एक्सपो सेंटर (यशोभूमि), द्वारका, नई दिल्ली में किया जाएगा। रेलवे, सूचना और प्रसारण, तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव, चयनित रेलवे कर्मचारियों को 70वां अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार प्रदान करेंगे। इस समारोह में रेल और जल शक्ति राज्य मंत्री, श्री वी. सोमन्ना, रेल और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री, श्री रवनीत सिंह, रेलवे बोर्ड के चेयरमैन और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री सतीश कुमार, साथ ही रेलवे बोर्ड के सदस्य और विभिन्न रेल मंडलों और प्रोडक्शन यूनिट के माह प्रबंधक शामिल होंगे। अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार-2025 के लिए नवाचार, संचालन दक्षता, सुरक्षा, संरक्षा, राजस्व वृद्धि, परियोजना को समय पर पूरा करने, खेल में बेहतरीन प्रदर्शन और सेवा के अन्य खास क्षेत्रों में योगदान करने वाले 100 लोगों का चयन किया गया है।

नवाचार और दक्षता को बढ़ावा देना

17 अधिकारियों और कर्मचारियों को नवाचार, प्रक्रिया शुरू करने के लिए सम्मानित किया जाएगा, जिससे उत्पादकता में सुधार होगा, खर्च में कमी आएगी, आयात कम होगा और संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल होगा। परिणामस्वरूप भारतीय रेलवे में दक्षता में वृद्धि होगी।

बहादुरी और निस्वार्थ सेवा का सम्मान

22 रेल कर्मचारियों और अधिकारियों को व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना किए गए निःस्वार्थ और सराहनीय सेवा व सुरक्षा कार्यों के लिए सम्मानित किया जाएगा, जिसके परिणामस्वरूप जीवन और रेलवे संपत्ति की रक्षा हुई, और सार्वजनिक सेवा के प्रति असाधारण साहस, प्रतिबद्धता और समर्पण का उदाहरण पेश किया गया।

राजस्व वृद्धि और सतर्कता

14 अधिकारियों और कर्मचारियों को रेलवे की आय में वृद्धि करने और बिना टिकट यात्रा, चोरी और अन्य कदाचारों से प्रभावी ढंग से निपटने में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया जाएगा, जिससे वित्तीय अनुशासन मजबूत होगा और राजस्व की सुरक्षा सुनिश्चित होगी।

परिचालन उत्कृष्टता और संपत्ति संरक्षण

19 कर्मचारियों और अधिकारियों को परिचालन में सुधार, सुरक्षा और संरक्षा बढ़ाने, बेहतर रखरखाव प्रथाओं को सुनिश्चित करने और रेलवे संपत्तियों के सर्वोत्तम उपयोग और संरक्षण को बढ़ावा देने में उनके अनुकरणीय कार्य के लिए सम्मानित किया जाएगा।

बड़ी परियोजना का समय पर पूरा होना

16 अधिकारियों और कर्मचारियों को रिकॉर्ड समय में महत्वपूर्ण रेल परियोजनाओं को पूरा करने के लिए सम्मानित किया जाएगा, जिससे बुनियादी ढांचे को विस्तार देने, क्षमता बढ़ाने और बेहतर संचालन प्रदर्शन में महत्वपूर्ण योगदान मिला है।

अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन

10 अधिकारियों और कर्मचारियों को परिभाषित श्रेणियों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया जाएगा, जो भारतीय रेलवे के विभिन्न कार्यात्मक क्षेत्रों में पेशेवर उत्कृष्टता, समर्पण और प्रभावशाली योगदान को दर्शाता है।

बेहतरीन खेल प्रदर्शन का भी सम्मान

रेलवे अपने 2 खिलाड़ियों को भी अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार-2025 से सम्मानित करेगा, जिन्होंने खेलों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल की है और भारतीय रेलवे का नाम रोशन किया है।

व्यक्तिगत सम्मान से परे

व्यक्तिगत सम्मान के अलावा, अलग-अलग श्रेणियों में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले रेल मंडलों को 26 शील्ड प्रदान किए जाएंगे, जो उनकी शानदार उपलब्धियों और कुल मिलाकर बेहतरीन प्रदर्शन को पहचान देंगे।

सम्मानित होने वालों में ऐसे रेल कर्मचारी शामिल हैं जिन्होंने महाकुंभ जैसे बड़े आयोजनों के दौरान सुरक्षित और बिना किसी व्यवधान के रेलवे संचालन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान रेल कर्मियों के विशेष योगदान को भी सम्मान मिलेगा जिन्होंने मुश्किल परिस्थितियों में भी रेलवे संचालन और जनता को राहत सुनिश्चित की। साथ ही ऐसे कर्मी भी सम्मानित सोची में हैं जिन्होंने मुश्किल सेक्शन में एडवांस्ड बैलास्ट क्लीनिंग मशीनों को पेश किया, जिससे ट्रैक सुरक्षा, यात्रा की गुणवत्ता और लंबे समय तक रखरखाव की दक्षता में काफी सुधार हुआ। यह पुरस्कार समारोह भारतीय रेलवे के समर्पण, उच्च व्यावसायिकता और अनुकरणीय सेवा को पहचानने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, साथ ही एक सुरक्षित, अधिक कुशल और यात्री-केंद्रित रेल प्रणाली बनाने में अपने कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों का उत्सव भी मनाता है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने क्रेडाई अहमदाबाद-गाइहेड के 20वें भव्य प्रॉपर्टी शो-ओलंपियाड का उद्घाटन किया

कैबिनेट मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया की प्रेरक उपस्थिति

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार को क्रेडाई अहमदाबाद-गाइहेड (गुजरात इंस्टीट्यूट ऑफ हाउसिंग एंड एस्टेट डेवलपर्स) के 20वें भव्य प्रॉपर्टी शो-ओलम्पियाड का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने 'आ अमदावाद नो दसको छे' फिल्म की लॉन्चिंग की और फिल्म देखी। कार्यक्रम में वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया भी मौजूद रहे। अहमदाबाद के जीएमडीसी मैदान पर 9,10 और 11 जनवरी, 2026 को आयोजित होने वाले इस प्रॉपर्टी शो का उद्घाटन करते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि आज का दिन राज्य और देश के लिए ऐतिहासिक है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में आज 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' की शुरुआत हुई है, जो भारत की अडिग श्रद्धा, संस्कृति और गौरव का प्रतीक है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सोमनाथ मंदिर केवल एक धार्मिक स्थान ही नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास और स्वाभिमान का प्रतीक भी है। इतिहास में अनेकों बार इस देश की संस्कृति को तोड़ने का प्रयास किया गया, लेकिन भारत ने हमेशा उससे उबरकर दुनिया भर में अपना डंका बजाया है। आज भारत जिस प्रकार वैश्विक स्तर पर गौरव के साथ आगे बढ़ रहा है, उसका मुख्य कारण प्रधानमंत्री का मजबूत और दूरदर्शी नेतृत्व है। न्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री ने सदैव ही विकास के साथ-साथ विरासत के संरक्षण पर सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ बन रहे आवासों से आमजन का जीवन सुख-सुविधा युक्त हो गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▸▸ आज का दिन राज्य और देश के लिए ऐतिहासिक : आज से 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' की भव्य शुरुआत

▸▸ प्रॉपर्टी, इंफ्रास्ट्रक्चर और उद्योग क्षेत्र में हो रही प्रगति से राज्य की आर्थिक शक्ति और मजबूत होगी

अहमदाबाद के विकास को लेकर मुख्यमंत्री ने कहा कि आने वाले दशक में अहमदाबाद कई गुना विकास करेगा। प्रॉपर्टी, इंफ्रास्ट्रक्चर और उद्योग क्षेत्र में हो रही प्रगति से राज्य की आर्थिक शक्ति और मजबूत होगी। सरकार के रूप में हमें गर्व है कि अहमदाबाद और गुजरात विकास के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे पर मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्लोबल वॉर्मिंग जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए बरसाती पानी का संग्रहण, भूगर्भ जल संरक्षण और ऊर्जा की बचत जैसे उपायों को आज से ही अमल में लाना जरूरी है। पर्यावरण के संरक्षण के साथ विकास करना ही विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग है।

मुख्यमंत्री श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत का स्वप्न साकार करने में विकसित गुजरात की भूमिका महत्वपूर्ण है और राज्य सरकार इस दिशा में लगातार प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य कर रही है। कार्यक्रम में महापौर श्रीमती प्रतिभा जैन, भारतीय रियल एस्टेट डेवलपर्स संघों का परिसंघ (क्रेडाई) के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शेखरभाई पटेल, श्री आलापभाई पटेल, भारतीय गुणवत्ता परिषद (क्यूसीआई) के अध्यक्ष श्री जक्षय शाह, गाईहेड के पदाधिकारी, रीयल एस्टेट क्षेत्र के उद्योगपति, डेवलपर्स, निवेशक और बड़ी संख्या में नगरजन उपस्थित रहे।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व – भारत के अखंड स्वाभिमान की अभिव्यक्ति

▸▸ सोमनाथ मंदिर में स्थित बाणस्तंभ भारत की वैज्ञानिक दृष्टि, भूगोलीय समझ एवं अडिग आत्मविश्वास का प्रतीक

▸▸ बाणस्तंभ पर अंकित शिलालेख के अनुसार यहाँ से दक्षिण दिशा में पृथ्वी के अंत तक कोई भूखंड नहीं है

▸▸ इस पर्व अंतर्गत सोमनाथ में सहभागी होने वाले आगंतुकों के लिए जानने योग्य इतिहास

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित होने वाला सोमनाथ स्वाभिमान पर्व भारत की हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति की अखंड धारा को वर्तमान एवं भविष्य के साथ जोड़ने वाला राष्ट्रीय संकल्प बनेना। ऐसे में सोमनाथ मंदिर की भव्यता के साथ वर्षों पुराना इतिहास गुँथा हुआ है। भारत की सांस्कृतिक व आध्यात्मिक चेतना में सोमनाथ मंदिर केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि अखंड आस्था, राष्ट्रीय अस्मिता तथा संस्कृति के पुनरुत्थान का जीवंत प्रतीक है। भारत की प्राचीन संस्कृति, आध्यात्मिक परंपरा तथा राष्ट्रीय गौरव के जीवंत केन्द्र सोमनाथ मंदिर में आयोजित सोमनाथ स्वाभिमान पर्व भारत के ऐतिहासिक स्वाभिमान तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान की सशक्त अभिव्यक्ति समान कार्यक्रम है। इस पर्व के परिप्रेक्ष्य में मंदिर परिसर में स्थित बाणस्तंभ का विशेष ऐतिहासिक एवं प्रतीकात्मक महत्व उजागर होता है। सोमनाथ मंदिर के प्रांगण में अरब सागराभिमुख बाणस्तंभ प्राचीन भारत की वैज्ञानिक दृष्टि, भूगोलीय समझ तथा अडिग आत्मविश्वास का प्रतीक है। बाणस्तंभ पर अंकित संस्कृत शिलालेख के अनुसार (आसमुद्रांत दक्षिण ध्रुव, पर्यंत अबाधित ज्योतिर्मार्ग) यहाँ से दक्षिण दिशा में पृथ्वी के अंत तक कोई भूखंड-भूमि नहीं है, जो तत्कालीन भारत के विद्वानों की विकसित भूगोलीय समझ को दर्शाता है। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत बाणस्तंभ भारत के अखंड स्वाभिमान, अविरत संस्कृति तथा पुनर्जागृति के संदेश का प्रतीक है। आक्रांताओं के बारम्बार आक्रमणों और विध्वंस के बाद भी सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण तथा उससे जुड़ी विरासत भारत की अविचल आस्था तथा आत्मसम्मान को प्रतिबिंबित करते हैं। सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण से लेकर प्रधानमंत्री के दृढ़संकल्प समान स्वाभिमान पर्व तक की यात्रा भारत की सांस्कृतिक पुनर्स्थापना की साक्षी है। इस परंपरा को अधिक मजबूती देते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सोमनाथ के प्रति व्यक्त अटूट आस्था व सम्मान राष्ट्रीय चेतना को नई ऊँचाई देते हैं। उनके नेतृत्व में समग्र देश में ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण और प्रचार को विशेष प्राथमिकता दी गई है। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत बाणस्तंभ का स्मरण नई पीढ़ी को भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के साथ जोड़ता है और आत्मविश्वास, वैज्ञानिक विचार तथा राष्ट्रीय एकता का संदेश देता है। यह पर्व केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि भारत के अखंड स्वाभिमान, संस्कृति एवं राष्ट्र भावना की जीवंत अभिव्यक्ति के रूप में विशेष महत्व रखता है।

डीआरएम कप 2026 क्रिकेट स्पर्धा की शुरुआत

(जीएनएस)। वडोदरा के प्रतापनगर स्थित माधव राव सिंधिया स्टेडियम में आज से डीआरएम कप 2026 शुरु हुआ। इस कप का उद्घाटन वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके द्वारा किया गया। श्री भडके ने इस कप में भाग ले रही टीमों के खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया और उन्हें शिद्दत के साथ खेल भावना से अपने सभी मैच खेलने और उन्हें जीतने का आवाहन किया।

इस क्रिकेट कप में वडोदरा मंडल के विभिन्न विभागों एवं आफिसर्स टीम सहित कुल 16 टीमें क्रिकेट स्प्रिट के साथ भाग ले रही हैं। कप का फाइनल मैच माधव राव सिंधिया स्टेडियम में 20 जनवरी,2025 को खेला जायेगा।

सोमनाथ में जूनागढ के योग बोर्ड आदि संस्थानों की महिलाओं द्वारा अखंड शिवधुन का प्रारंभ

पर्व के प्रथम दिन 500 बहनों ने भजन, कीर्तिन तथा शिवधुन का लाभ लिया

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व सोमनाथ में शिवभक्ति का अनूठा पर्व बना है। अटूट आस्था के 1000 वर्ष अंतर्गत सोमनाथ में तीन दिवसीय कार्यक्रमों में श्रद्धालु श्रद्धापूर्वक सहभागी हो रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में आयोजित होने वाले स्वाभिमान पर्व अंतर्गत शौर्य सभा-शौर्य यात्रा तथा ओमकार मंत्र आदि कार्यक्रमों को लेकर सोमनाथ परिसर में गुरुवार को अखंड ओमकार जाप तथा अखंड शिव भजन के कार्यक्रम प्रारंभ हुए। इन कार्यक्रमों में जूनागढ से योग बोर्ड की महिला सदस्यों तथा विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों की महिला प्रतिनिधियों, योग-व्यायाम शिक्षकों तथा महिला कार्यकर्ताओं सहित 500 बहनों ने अखंड शिवधुन में भाग लिया। जब करताल, लोक कंठ के शिवभक्ति गीत भावमय रूप से गाए जा रहे थे, तब सोमनाथ मंदिर में आ रहे दर्शनार्थियों ने भी अखंड शिवधुन सुनकर श्रद्धा की भावना व्यक्त की। जूनागढ से विशेष बस सोमनाथ आई है। तीन दिनों तक विभिन्न क्षेत्रों से शिवभक्त शिवधुन में सहभागी होने वाले हैं। गुरुवार को पहले दिन शिवधुन कार्यक्रम का समन्वय जूनागढ की युवा विकास अधिकारी श्री नीताबेन वाळा ने किया। योग बोर्ड की जोन को-ऑर्डिनेटर श्री चेतनाबेन गजेरा ने श्रद्धा के साथ कहा कि सोमनाथ में स्वाभिमान पर्व आध्यात्मिक भाव का पर्व बना है और इसमें सहभागी होने का आनंद है। उनके साथ को-ऑर्डिनेटर श्री सोनलबेन भी सहभागी हुई।

सोमनाथ महादेव मंदिर परिसर में आयोजित हुआ भव्यातिभव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम, शिव आराधना के गीतों के साथ शिव भक्ति के रंग में रंगे दर्शक

▸▸ सांस्कृतिक कार्यक्रम में मंत्रियों श्री जीतूभाई वाघाणी, डॉ. प्रद्युमन वाजा तथा श्री कौशिक वेकरिया की उपस्थिति

▸▸ नगर में जोगी आया.... अगड़ बम, अगड़ बम..., हर हर महादेव... गीतों के नाद से गूंज उठा सोमनाथ ज्योतिर्लिंग देवालय

▸▸ सर्वश्री कीर्तिदान गढवी, जिगरदान गढवी तथा उमेश बारोट ने हमारी संस्कृति एवं सनातन धर्म के अहोभाव के साथ संगीत के सुर छेड़े, सांईराम दवे ने साहित्य की प्रस्तुति की

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के प्रथम दिन गुरुवार को सोमनाथ महादेव मंदिर परिसर में भव्यातिभव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, डॉ. प्रद्युमन वाजा तथा श्री कौशिक वेकरिया सहित महानुभाव सहभागी हुए। सांस्कृतिक कार्यक्रम में गुजरात के विख्यात कलाकारों श्री कीर्तिदान गढवी, श्री जिगरदान गढवी तथा श्री उमेश बारोट ने सोमनाथ महादेव की आराधना तथा भजनों के साथ हमारी संस्कृति, धरोहर एवं सनातन धर्म को संगीत के सुरों में पिरोकर अहोभाव के साथ शिव भक्ति में तर-ब-तर करने वाले गीतों की धूम मचाई। उपस्थित दर्शक मंत्रमुग्ध होकर शिव भक्ति में लीन बने और संगीत में झूमे। दर्शकों ने भी आत्मीयता से इस कार्यक्रम से जुड़कर शिव भक्ति के अनेक गीतों के साथ तालियाँ बजाकर कलाकारों के सुर में सुर मिलाया। सांईराम दवे ने साहित्य की प्रस्तुति के साथ सोमनाथ महादेव की स्थापना, विदेशी आक्रमणों, हमारे योद्धाओं और आज भी अडिग-अविचल इस सोमनाथ मंदिर तथा हमारी ऐतिहासिक धरोहर के विषय में वर्णन किया। कर्णप्रिय संगीत, रोशनी से जगमगा उठा मंदिर परिसर और निहार-निहार कर भी मन न भरे; ऐसा अलौकिक सोमनाथ ज्योतिर्लिंग का देवालय, इस त्रिवेणी संगम से मानो दिव्य वातावरण का सृजन हुआ। कलाकारों ने शिव भक्ति के गीतों के साथ गरबा गीतों की धूम मचाई। इस अवसर पर सांसद श्री राजेशभाई चुडासमा, विधायक श्री भगवानभाई बारड, पूर्व सांसद श्री मोहनभाई कुंडारिया, सचिव श्री आलोक पांडे, टी. नागराजन, दिलीप राणा, गीर सोमनाथ जिला कलेक्टर श्री आई. ए. उपाध्याय आदि भी उपस्थित रहे।

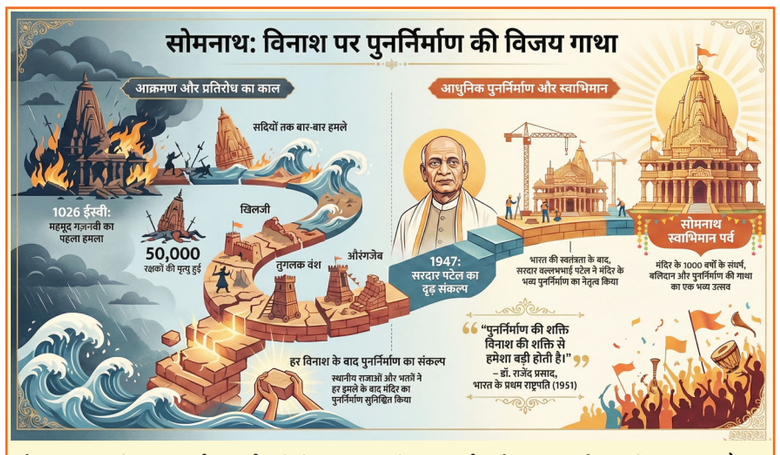

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। 9 जनवरी को सर्वश्री राजभा गढवी, कीर्ति सागठिया व हार्दिक दवे तथा 10 जनवरी को सर्वश्री हंसराज रघुवंशी, ब्रिजराज गढवी व मयूर दवे आदि कलाकारों के कार्यक्रम आयोजित होने वाले हैं। ऐसे में गीर सोमनाथ जिला प्रशासन द्वारा सोमनाथ दर्शन को आने वाले श्रद्धालुओं तथा सोमनाथवासियों से इन कार्यक्रमों को देखने आने का अनुरोध किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गांधीनगर में इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी भावनगर को दान की गई कैंसर स्क्रीनिंग वैन का लोकार्पण किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'हेल्थ एंड वेलनेस फॉर ऑल' के ध्येय को मिलेगी और अधिक तेजी

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार को गांधीनगर में कैंसर की शुरुआती पहचान और जांच के लिए महत्वपूर्ण कैंसर स्क्रीनिंग वैन-'आशा वैन' का लोकार्पण किया।

जेनवर्क फार्मास्युटिकल की ओर से इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी की भावनगर शाखा को दान के रूप में यह आशा वैन भेंट की गई है।

यह वैन ईवीए-प्रो डायग्नोस्टिक्स, मैमोग्राफी यूनिट और विशेषज्ञ टेली परामर्श से सुसज्जित है।

इतना ही नहीं, इस वैन के जरिए किसी भी स्थान पर अल्ट्रा मॉडर्न उपकरणों की मदद से विशेष रूप से फेफड़ों के कैंसर, मुंह के कैंसर, ब्लड कैंसर, सर्वाइकल कैंसर, पैंक्रियाटिक कैंसर, लीवर कैंसर और ब्रेस्ट एंड प्रोस्टेट कैंसर जैसे रोगों का निदान किया जा सकेगा।

यह वैन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'हेल्थ एंड वेलनेस फॉर ऑल' के उदार ध्येय को ग्रामीण स्तर पर और अधिक गति देने में उपयुक्त साबित होगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 10 प्रकार के कैंसर रोगों के लिए स्क्रीनिंग वैन को इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी की भावनगर शाखा को जनसेवा के लिए सौंपा। इस अवसर पर जेनबर्क फार्मा के प्रबंध निदेशक श्री आशीष भूता और इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी भावनगर शाखा के पदाधिकारी मौजूद रहे।